राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 286
शैतान
सुपरकमांडोध्रुव
अनुपम
Vinod

संजय गुप्ता पेश करते हैं
शीतान
कथा: जॉली सिन्हा.
चित्र: अनुपम सिन्हा.
इंकिंग: विनोद कुमार.
सुलेख एवं रंग संयोजन: सुनील पाण्डेय.
सम्पादक: मनीष गुप्ता.
चाहे जितना छटपटा ले ध्रुव! लेकिन आज हम तुझे भी शीतान बनाकर ही रहेंगे!

पेड़-पौधों के राजा वनपुत्र के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: **डॉक्टर वायरस** और हत्यारा कौन?
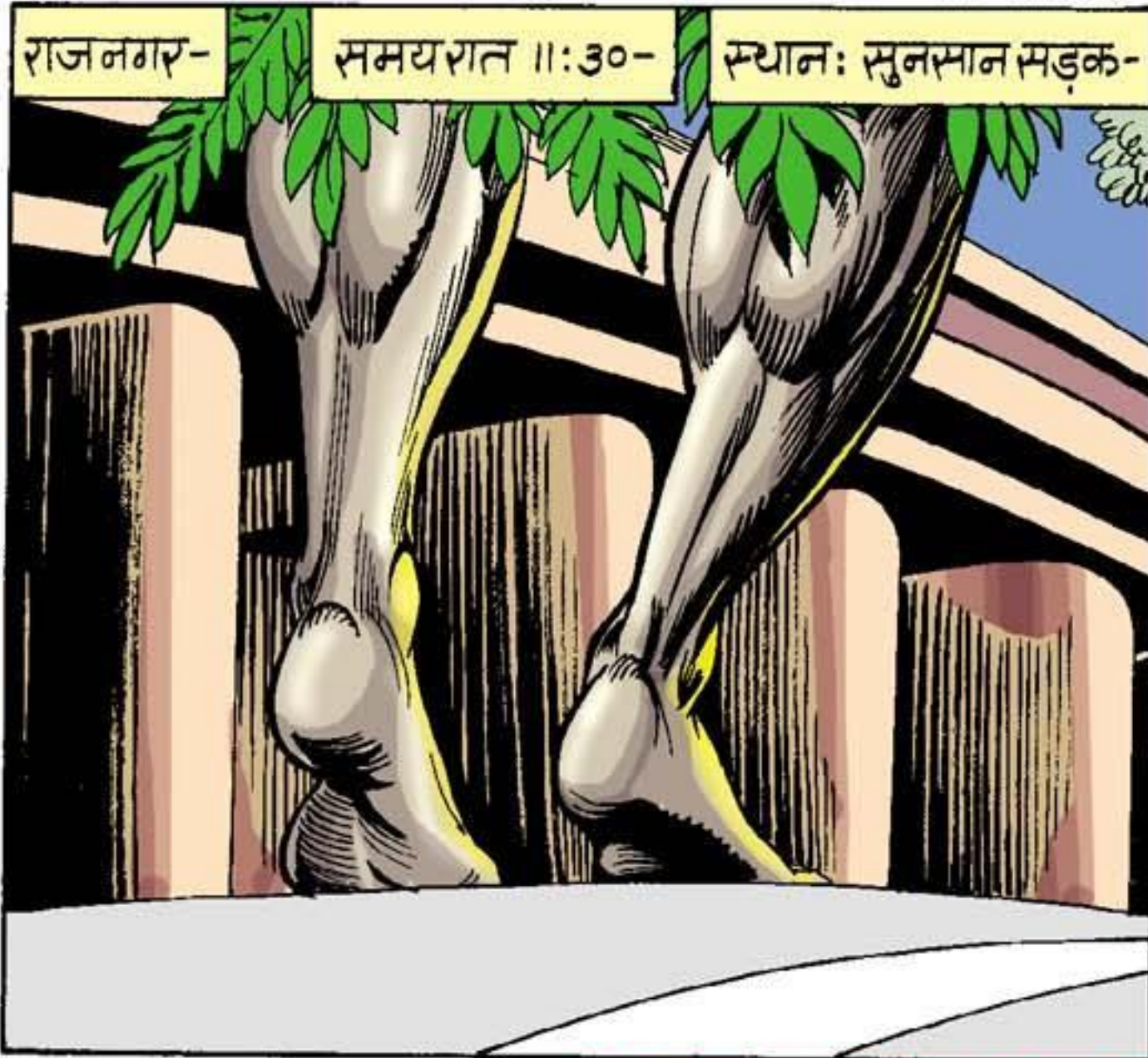
लेकिन हथियारों को गुंडों के हाथों से अलग नहीं कर पाया -
ओह! लेकिन ये हथियार मुझे नुकसान नहीं पहुंचा सकते!
आ आ आ ऽऽऽ
ह... हमको उतारो!
अगर हमको पता होता कि तू जादूगर है तो हम तुझसे कभी पंगा नहीं लेते।
लेकिन तभी-
ये... ये क्या है?
बर्फ! राजनगर में बर्फ गिर रही है! कैसे? राजनगर में तो ठंड तक नहीं पड़ती है!
जो हो रहा है, अच्छा ही हो रहा है!...
...क्योंकि ठंड से जड़ें मर रही हैं! और हम आजाद हो रहे हैं...
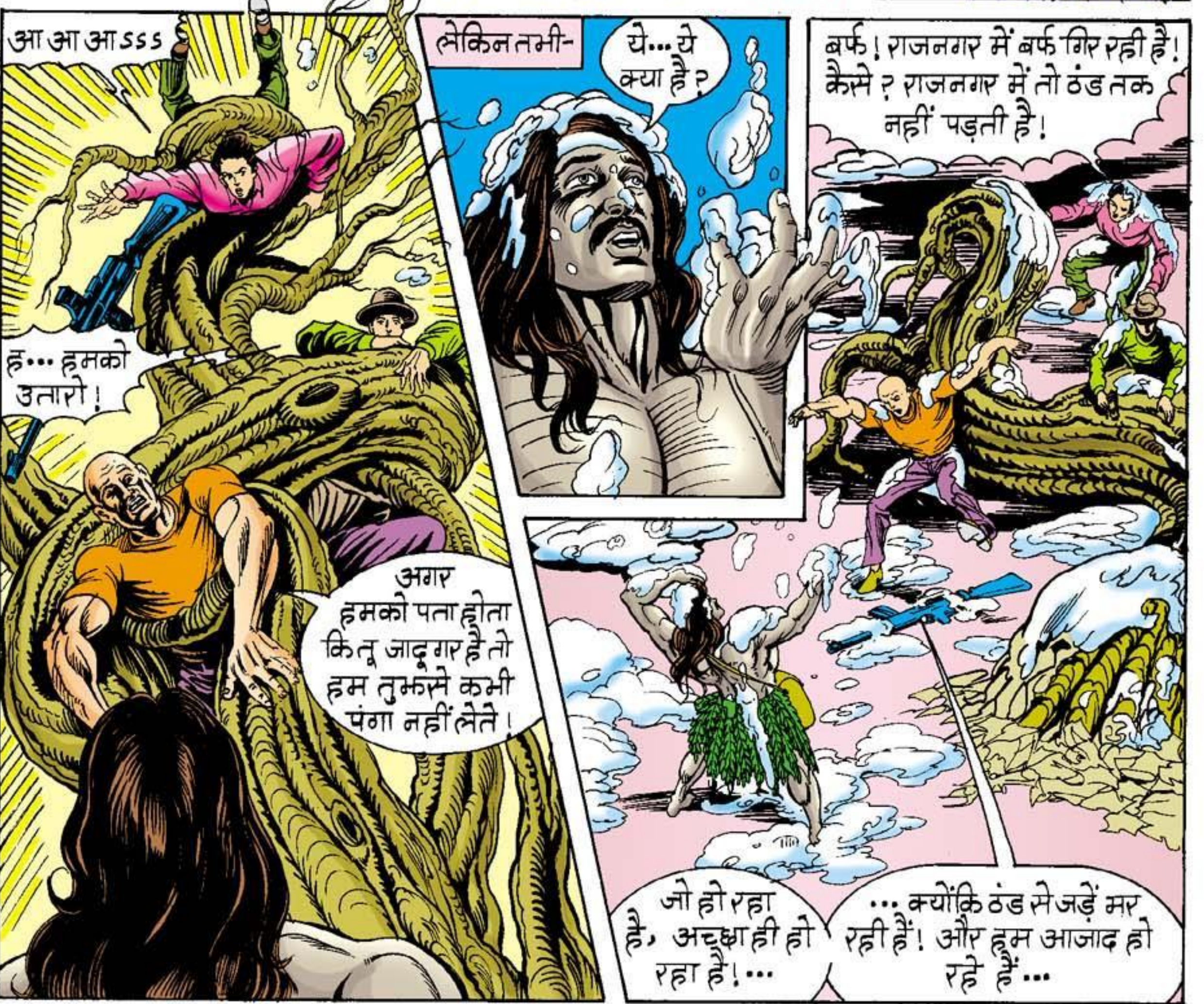
अब हम जंगली को आराम से मार सकते हैं!
पौधों, बढ़ो! बढ़ो!
पौधे मूर्च्छित अवस्था में थे-

और वनपुत्र को मौत से बचाने वाला कोई नहीं था-

सिवाय उस बर्फीले फरिश्ते के-
पहले बर्फ! और अब बर्फीला फरिश्ता!
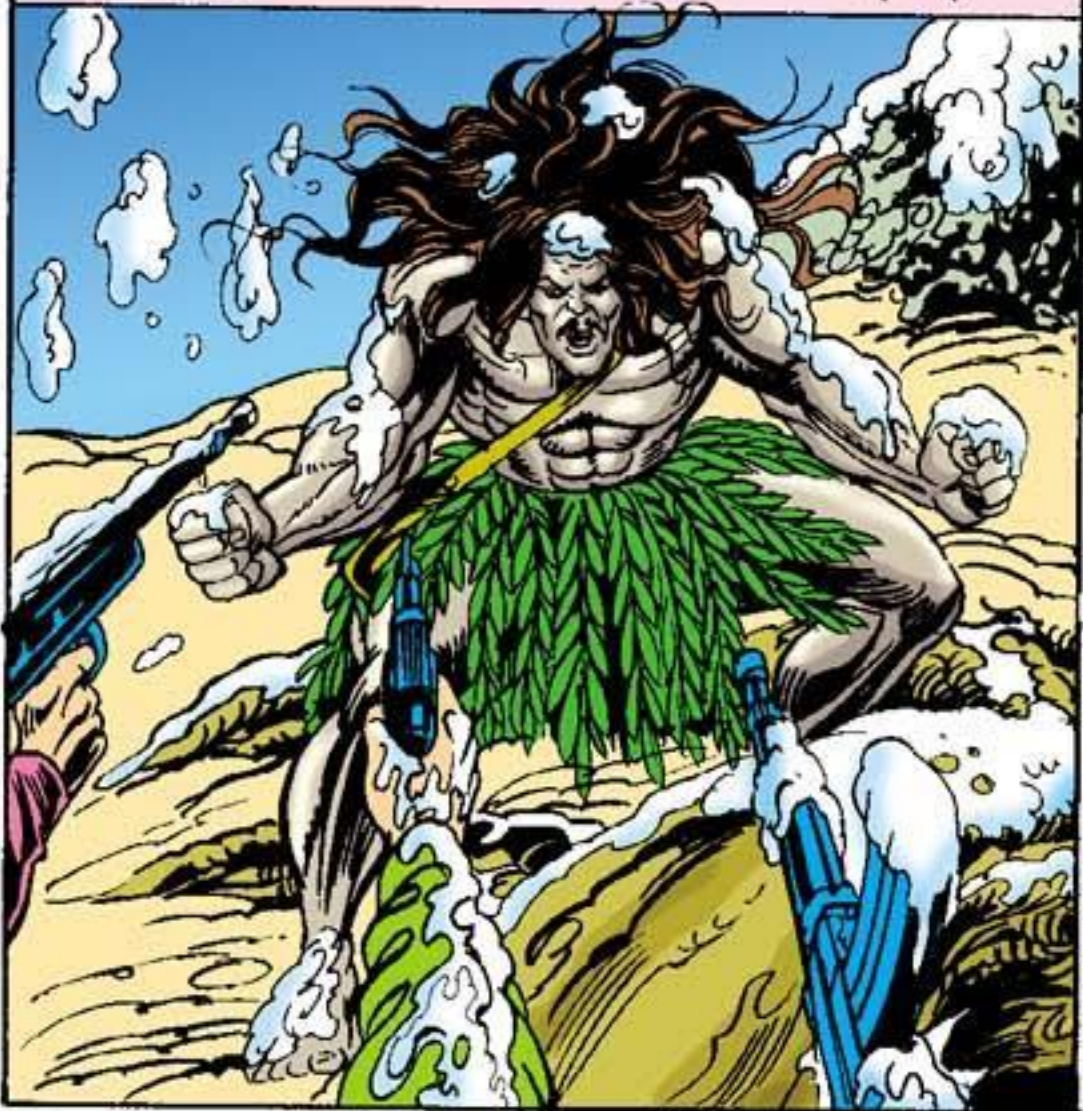
फरिश्ता नहीं, वनपुत्र, मैं ध्रुव हूं! स्टारलाइन से भूलकर यहां आते-आते मेरा यह हाल हो गया!
लेकिन तुम यहां तक आए कैसे?
तुम पर पहली गोली चलते ही एक चिड़िया मुझे तुम्हारा पता बता गई थी! लेकिन मुझे बर्फ गिरने का आभास नहीं था!

पहले मैं मोटरसाइकल से आ रहा था! लेकिन सभी रास्ते बर्फ से ढके हुए हैं। न जाने ये बर्फ कहां से आ रही है? खैर, तुम ये बताओ कि तुम राजनगर में क्या करने आए हो?
तुमसे ही मिलने आया था, ध्रुव!
मुझसे? ऐसा क्या काम आन पड़ा?
इनकी वजह से मुझे तुम्हारे पास आना पड़ा ध्रुव! ये जंगल में इस बैग को जमीन में दबा रहे थे! मुझको देखते ही मुझ पर गोलियां चलाने की कोशिश की! पर मैंने पहले ही इनको पेड़ों के शिकंजे से जकड़ दिया!
बैग को खोलकर देखा तो इसमें ये सिलेंडर भरे हुए थे! सोना, रत्न वगैरह होते तो मैं उनको पुलिस के हवाले कर देता! पर इस बारे में मैंने तुम्हारी राय लेना उचित समझा! कहीं ये किसी बड़े षड्यंत्र का कोई हिस्सा तो नहीं है!
ये तो यही गुंडे बता सकते हैं! बताओ, क्या है इन सिलेंडरों में? किस काम में आते हैं यह सिलेंडर?
हमको नहीं पता! हम तो बस पैसे लेकर काम करते हैं! ये सिलेंडर हमने महानगर की एक केमिकल फैक्ट्री से चोरी किए थे! एक पन्द्रह फुट लंबे और तलवार जैसी दांतों वाले बाघ ने फैक्ट्री पर हमला किया!
नागराज ने घटना-स्थल पर आकर बाघ को तो मार डाला! पर मौके का फायदा उठाकर हम सिलेंडर ले उड़े!
यह सारा प्लान उसी शख्स ने हमको बताया था, जिसने हमको यह कांट्रेक्ट दिया था!
उसको ये सिलेंडर हमें दो दिनों बाद सौंपने थे! इसलिए हम इनको जंगल में दबा रहे थे!
क्या तुम भी जमीन को कांपता हुआ सा महसूस कर रहे हो, वनपुत्र?
हां, ध्रुव! जमीन में कंपन हो रहे हैं!
वैसे ही जैसे जंगल में हाथियों के झुंड के चलने पर होते हैं!
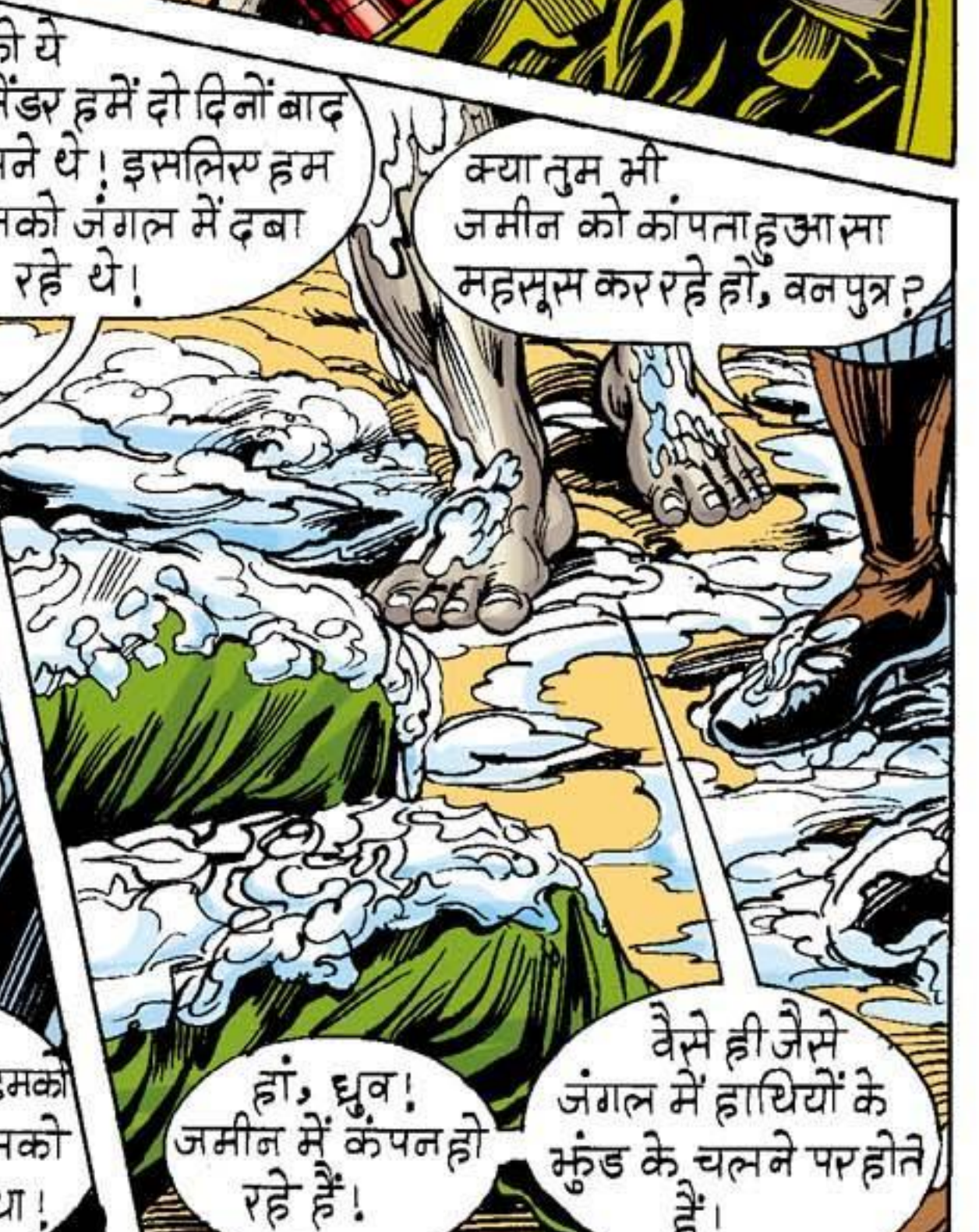
हे वनदेव! तो ये है जमीन को कंपाने वाला!
ऐसा जीव तो मैंने पहले कभी देखा ही नहीं है!
देखते कैसे, वनपुत्र? ये 'मैमोथ' है! हाथी का पूर्वज! जो 'शीत युग' के दौरान पृथ्वी पर रहता था!
और इसकी प्रजाति को लुप्त हुए हजारों वर्ष बीत चुके हैं! फिर ये कहां से जिन्दा होकर आ गया?
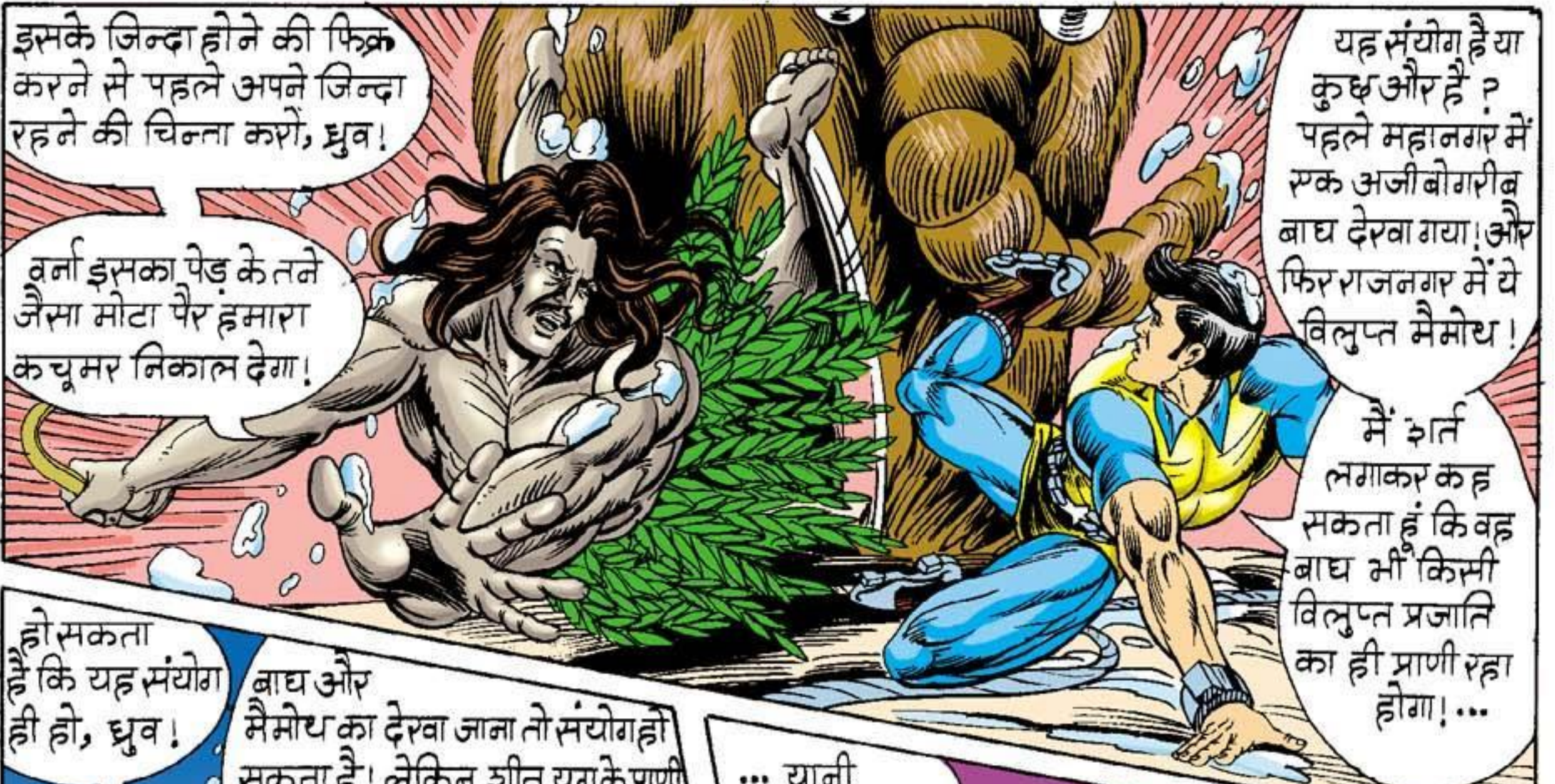
इसके जिन्दा होने की फिक्र करने से पहले अपने जिन्दा रहने की चिन्ता करो, ध्रुव!
वर्ना इसका पेड़ के तने जैसा मोटा पैर हमारा कचूमर निकाल देगा!
यह संयोग है या कुछ और है? पहले महानगर में एक अजीबोगरीब बाघ देखा गया! और फिर राजनगर में ये विलुप्त मैमोथ!
मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि वह बाघ भी किसी विलुप्त प्रजाति का ही प्राणी रहा होगा!...
हो सकता है कि यह संयोग ही हो, ध्रुव!
बाघ और मैमोथ का देखा जाना तो संयोग हो सकता है! लेकिन शीत युग के प्राणी मैमोथ का आना और राजनगर में पहली बार बर्फ का गिरना संयोग नहीं हो सकता!
ये कोई जानबूझकर कर रहा है! और मेरा ख्याल है कि वह इस घटनाक्रम पर नजर भी रख रहा होगा...
... उसको सामने लाने का एक ही तरीका है कि उसके काम में बाधा डाल दी जाए...
... यानी मैमोथ को रोक दिया जाए!
यह काम मेरी पतली-दुबली स्टार लाइन शायद न कर पाए...
...लेकिन मैमोथ द्वारा तोड़ा गया बिजली का यह तार जरूर कर सकता है!
ओ गुड! बर्फ से सड़कें ढकी होने के कारण पुलिस की गाड़ियां तो नहीं आ पाईं, लेकिन पुलिस हैलीकॉप्टर जरूर आ गया है! ये मैमोथ को आराम से उठाकर चिड़ियाघर में छोड़ सकता है!

हैलीकॉप्टर से एक जाल, मैमोथ पर आ गिरा-
अब ये हिल भी नहीं सकेगा! और हम इसको उठाकर सुरक्षित स्थान पर छोड़ आएंगे!
लेकिन मैमोथ ने न सिर्फ बिजली के खंभे को उखाड़ डाला-
बल्कि उसको हवा में उछाल भी दिया।
और खंभा हैलीकॉप्टर के परों में जा घुसा-
हे भगवान! ये तो बहुत शक्तिशाली है! शुक्र है हैलीकॉप्टर के सवार नर्म बर्फ में गिरने के कारण बच गए!
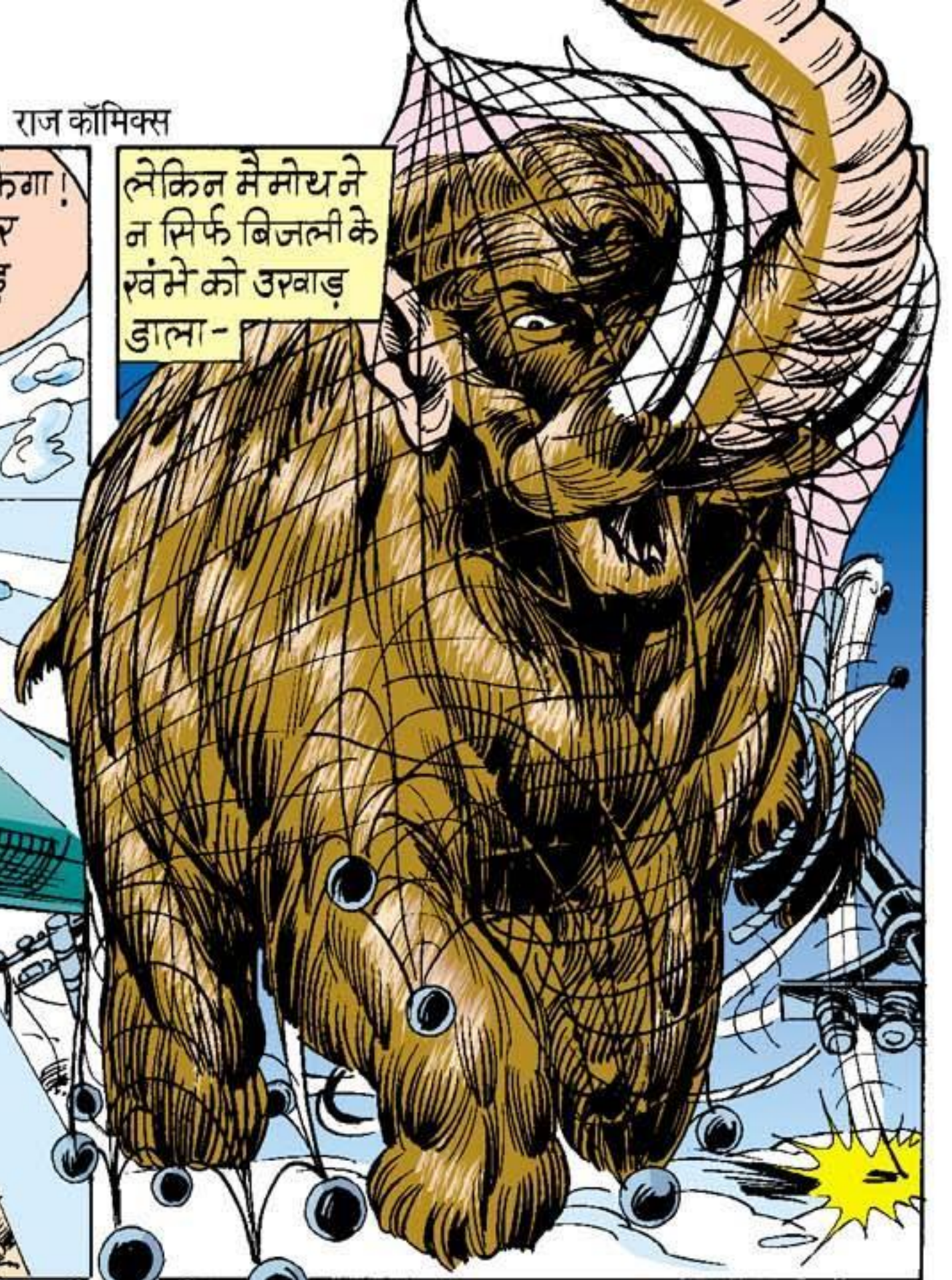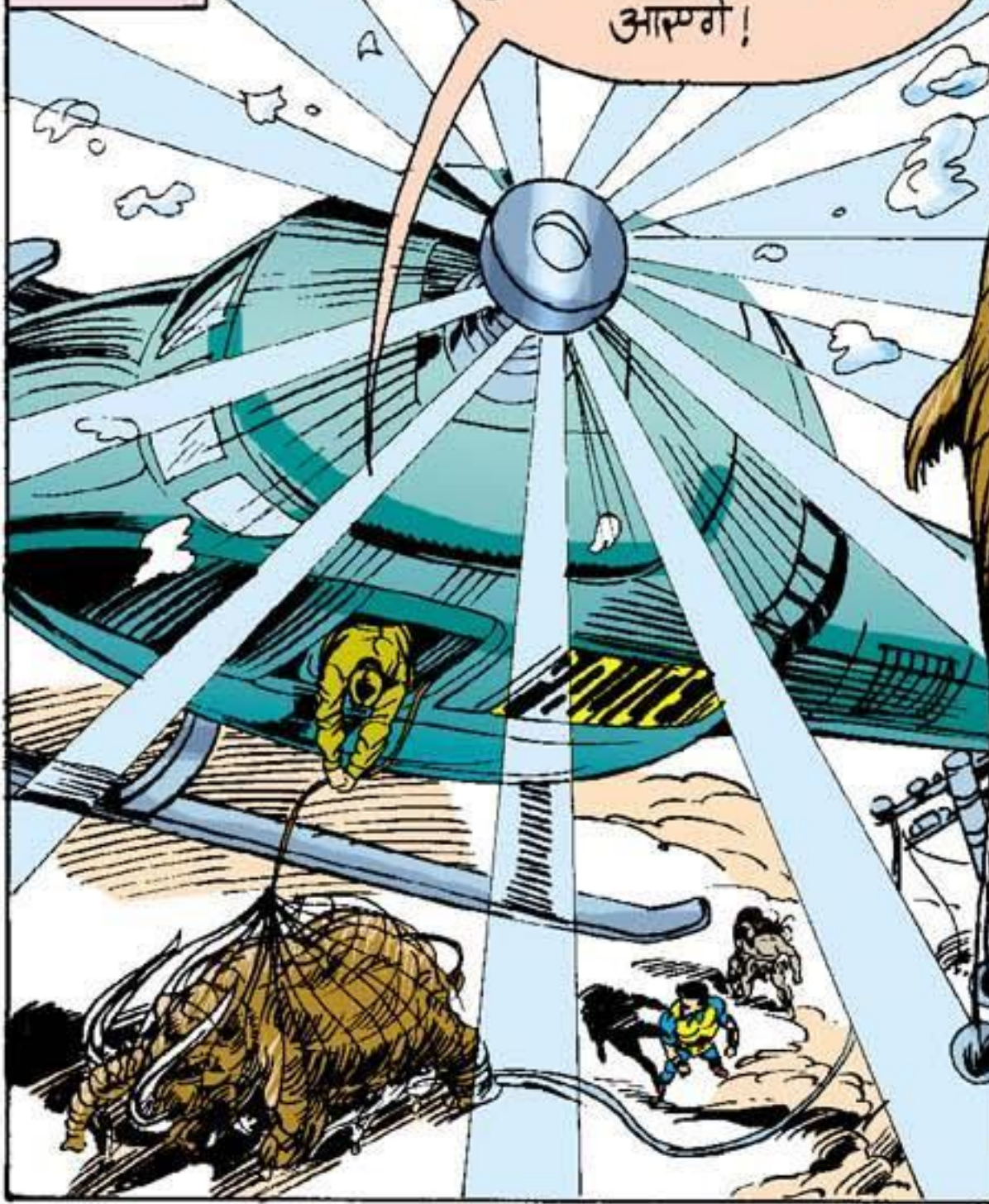
हैलीकॉप्टर की आग ने जाल के तारों को भी जलाकर इतना कमजोर कर दिया है कि मैमोथ उसे तोड़ सके!
लेकिन अब ये जा कहां रहा है?
MOHA
इसकी चाल से ऐसा लग रहा है कि इसको पता है कि इसे जाना कहां है!
आओ वनपुत्र!
हम इसका पीछा करके इसको रोकने की कोशिश करेंगे!
ये फैक्ट्री एरिया में आ गया है!
ये तो एक के बाद एक फैक्ट्रियों को तोड़ता ही जा रहा है! इसको रोकना होगा!
FACTO
मैं कोशिश करता हूं ध्रुव! अभी शीत से सारे पेड़-पौधे मूर्च्छित नहीं हुए हैं! कुछ अभी भी मेरा आदेश मान सकते हैं!
लेकिन-
मैमोथ में बहुत शक्ति है ध्रुव! अधमरे पौधे भी इसको रोक नहीं पाएंगे!
ये अपने आप उस फैक्ट्री के अंदर जाकर रुक गया है!
इसको पकड़ने का यही एक मौका है!

फिर इसको रोकने के लिए दूसरा तरीका काम में लाना पड़ेगा!

ध्रुव के गले से गुर्राहट उबली-

गर्रर्रर्र बौऊऊऽऽऽ

और सर्दी से ठिठुर रहे गली के कुत्तों को, मैमोथ को भमोड़ने का काम मिल गया-

अब कुत्ते मैमोथ को व्यस्त रखेंगे वनपुत्र! यहां पर भी कुछ-कुछ वैसा ही हो रहा है, जैसा कि उन गुंडों के अनुसार महानगर में हुआ था! मैमोथ ने सभी को फैक्ट्री के बाहर भगा दिया है! हो सकता है कि यहां पर भी उसी तरह से गुंडे लूटपाट करने की कोशिश करें! हमको पूरी फैक्ट्री में घूमकर देखना होगा!
ठीक है, ध्रुव! शायद ऐसा करने से ही हम मामले की तह तक पहुंच पाएं!
ओह! ठंड बढ़ती ही जा रही है ध्रुव!
खुले खिड़की दरवाजों से आकर बर्फ ने फैक्ट्री के फर्श को भी ढक लिया है!
यहां पर तो कोई नजर नहीं आ रहा है ध्रुव!
वैसे भी यह रजाई में घुसने का मौसम हो रहा है! डकैती डालने का नहीं!
धड़ाक
उस तरफ कांच टूटा है! उधर ही घातक गैसों के सिलेंडर रखे हुए हैं!
आओ वनपुत्र!
मेरा शक सही था! किसी ने सिलेंडरों को बाहर निकाला है!
और ये है वह डकैत!
हे वनदेव! इसको तो ठंड लगने का सवाल ही नहीं है!

मुझे ठंड नहीं लगती! लेकिन मुझे देखकर लोगों के हाथ-पैर जरूर ठंडे पड़ जाते हैं!

स्नोरोबो लगता है ये! मशीन और रुई सी बर्फ का शरीर है इसका! यानी षड्यंत्रकारी को पता था कि इस बार मामूली गुंडों से काम नहीं चलेगा! इसलिए उसने इसको भेजा है!

कोई फर्क नहीं पड़ता है, ध्रुव! ये एक है, और हम दो! किसी न किसी तरह से इससे निपट ही लेंगे!

हम भी...
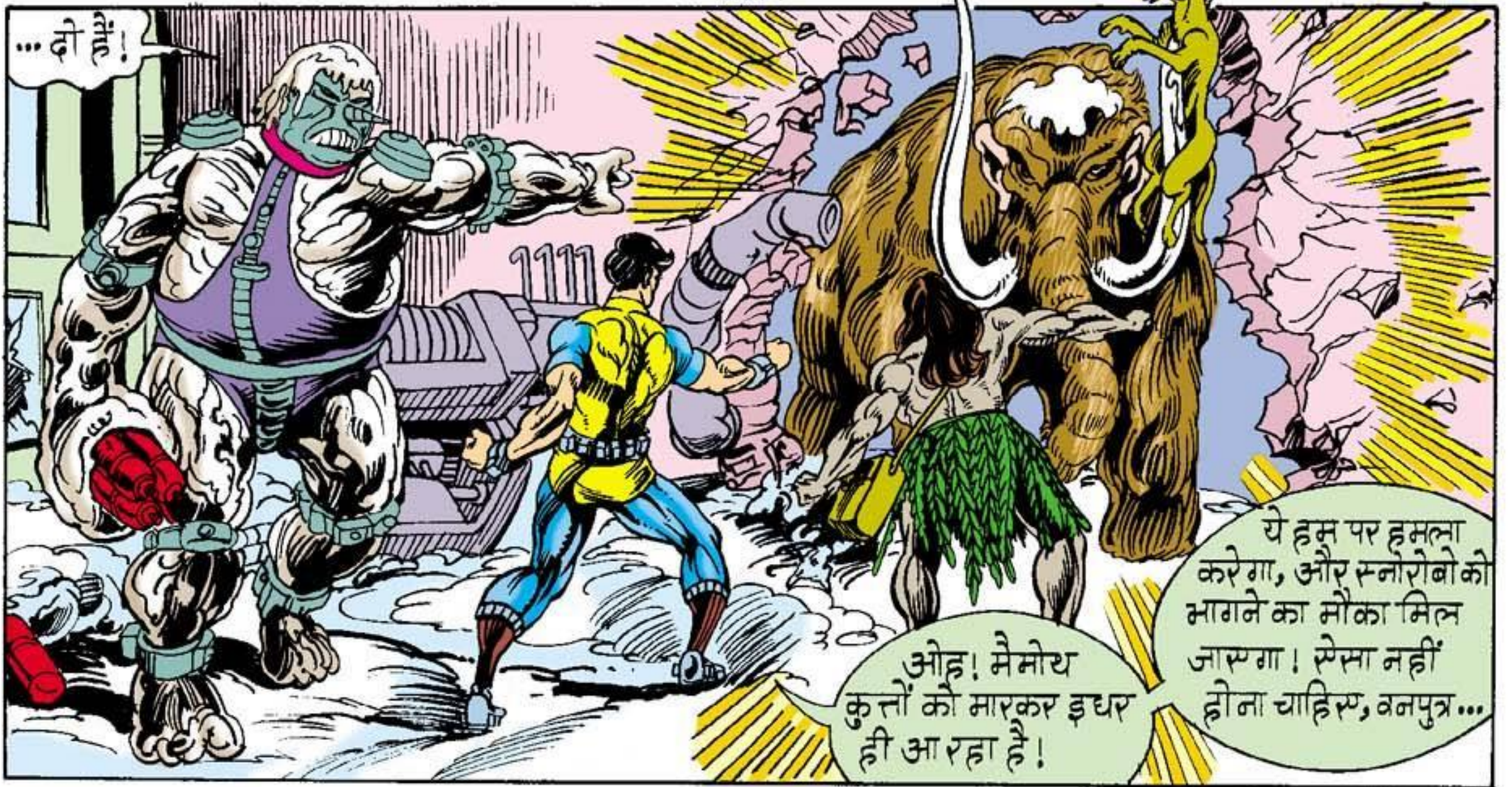
...दी हैं!
ओह! मैमोथ कुत्तों को मारकर इधर ही आ रहा है!
ये हम पर हमला करेगा, और स्नोरोबो को भागने का मौका मिल जाएगा! ऐसा नहीं होना चाहिए, वनपुत्र...

... तुम स्नोरोबो को भागने से रोको, तब तक मैं मैमोथ से पीछा छुड़ाने का कोई स्थायी समाधान निकालता हूं!

अगले ही पल ध्रुव को पता चल गया कि मैमोथ को रोकना आसान काम नहीं है-
तड़ंक
सूंड से सिर टकराया, और ध्रुव का दिमाग बेहोशी के अंधेरे में डूबता चला गया-

अब उसके सिर और मैमोथ के भारी पैर के बीच में कुछ ही फुट का फासला था-

और उसको बचा सकने वाला एक मात्र व्यक्ति खुद ही मौत से जूझ रहा था-
ओफ़! मेरे पास तो सिर्फ पेड़-पौधों को नियंत्रित करने वाली शक्तियां हैं! और वे शक्तियां इस शीत में बेकार हैं! पौधे शीत में निष्क्रिय हो जाते हैं... अब इस दैत्य से कैसे निपटूं?
चाहे तेरे पास कोई भी शक्ति हो जंगली! फिर भी तू मुझसे बच नहीं पाएगा!
आऽऽऽह! बर्फ में ढक दिया है मुझे इस कम्बख्त ने! दम घुट रहा है! बर्फ ने मेरे हाथ भी जकड़ लिए हैं! एक पैर भी बर्फ में जमा हुआ है! वर्ना मैं मशीनों तक पहुंचकर उनसे टकराकर बर्फ को तोड़ने की कोशिश करता!
अब करूं तो क्या करूं?
हा हा हा!
मुझे रोकने चला था!
मौत ध्रुव के भी करीब थी-
बहुत करीब-
ओफ़! सही समय पर होश आ गया! वर्ना सिर तरबूज की तरह फट गया होता!
अब मैं... आऽऽऽह! मैमोथ तो मुझे उठने का मौका ही नहीं दे रहा है! और इसका पैर लगातार मुझे कुचलने के लिए जमीन से टकराता ही जा रहा है!
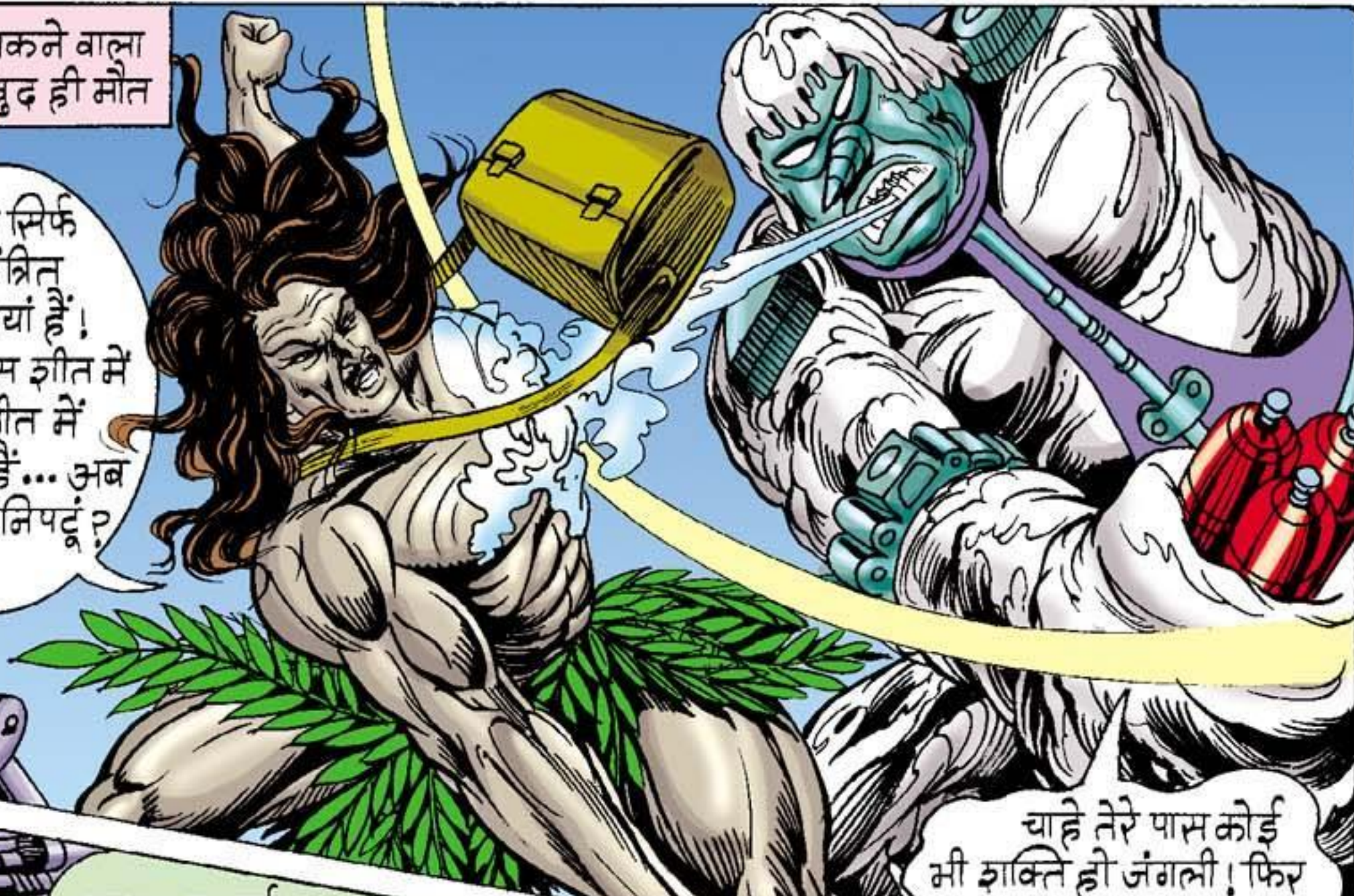
इसको रोकने का सबसे अच्छा तरीका स्टार ब्लेड है!
और इस बार जब मैमोथ का पांव जमीन से टकराया-
तो जमीन और उसके पैर के बीच में स्टार-ब्लेड था-
लेकिन यह तय नहीं हो पाया कि ध्रुव कितनी देर तक अपने पैरों पर खड़ा रह पाएगा!
मैमोथ चिंघाड़ उठा-
और ध्रुव को उठने का मौका मिल गया-
ओऽऽऽह! इसके वार से चारों तरफ मशीनी टुकड़े उड़ रहे हैं! इसका मोटे कंबल सा बदन तो इनकी टक्कर झेल जाएगा! पर मेरी तो हड्डियां कई टुकड़ों में टूट जाएंगी!
यह हाथी का पूर्वज है, और हाथी के मस्तक में अंकुश को गड़ाकर काबू में किया जाता है! अंकुश का काम मैं इसी के द्वारा तोड़े गए मशीनी टुकड़ों से ले सकता हूं! बस एक बार इसके सिर तक पहुंच जाऊं!
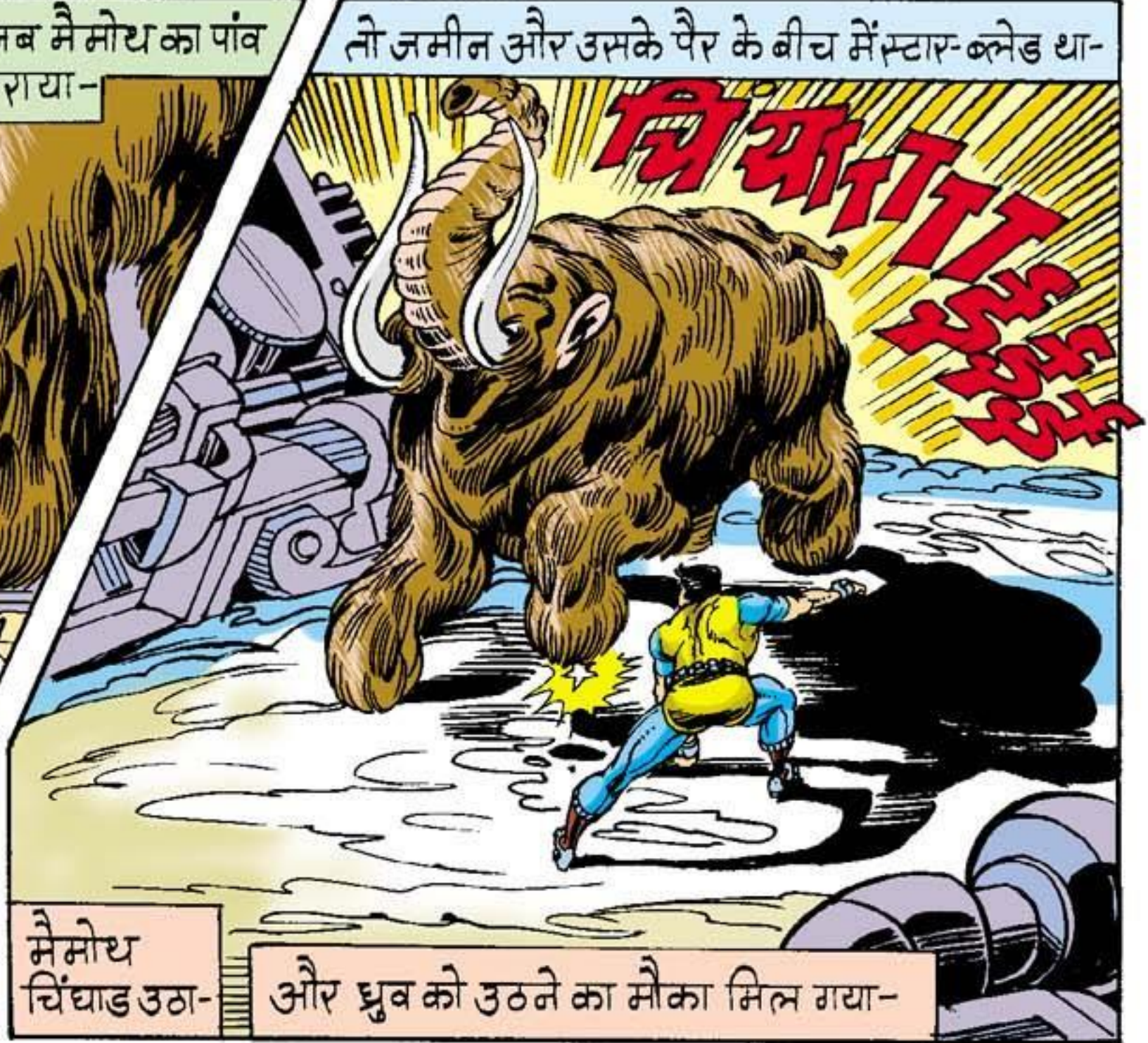
ध्रुव, मैमोथ के सिर तक पहुंच गया! लेकिन 'अंकुश' घुसाने से पहले ही-
उसका शरीर जमीन से आ टकराया-
आऽऽऽह!
अब कैसे रोकूं इस दैत्य को! स्टारब्लेड्स से बचने के लिए अबइसने अपने पैरों में 'बर्फ के जूते' पहन लिए हैं!
वनपुत्र मौत को दूर धकेलने की कोशिश कर रहा था-
आऽऽऽह! आखिरकार मेरा पैर खुद टूटने से पहले फर्श को तोड़कर मिट्टी तक पहुंच गया है! मैंने अपनी मुट्ठी में अपने पास रखे बीजों को पहले ही जकड़ रखा था!
अब मैं इन बीजों को मिट्टी में डाल दूंगा, और वातावरण की ठंड का असर दूर करने के लिए अपने पैर की गर्मी दूंगा इनको!
वनपुत्र का आदेश पाकर पौधे तेजी से बढ़े, और वनपुत्र के शरीर पर चढ़ा बर्फ का खोल टूट गया-
कड़ कड़ाड़
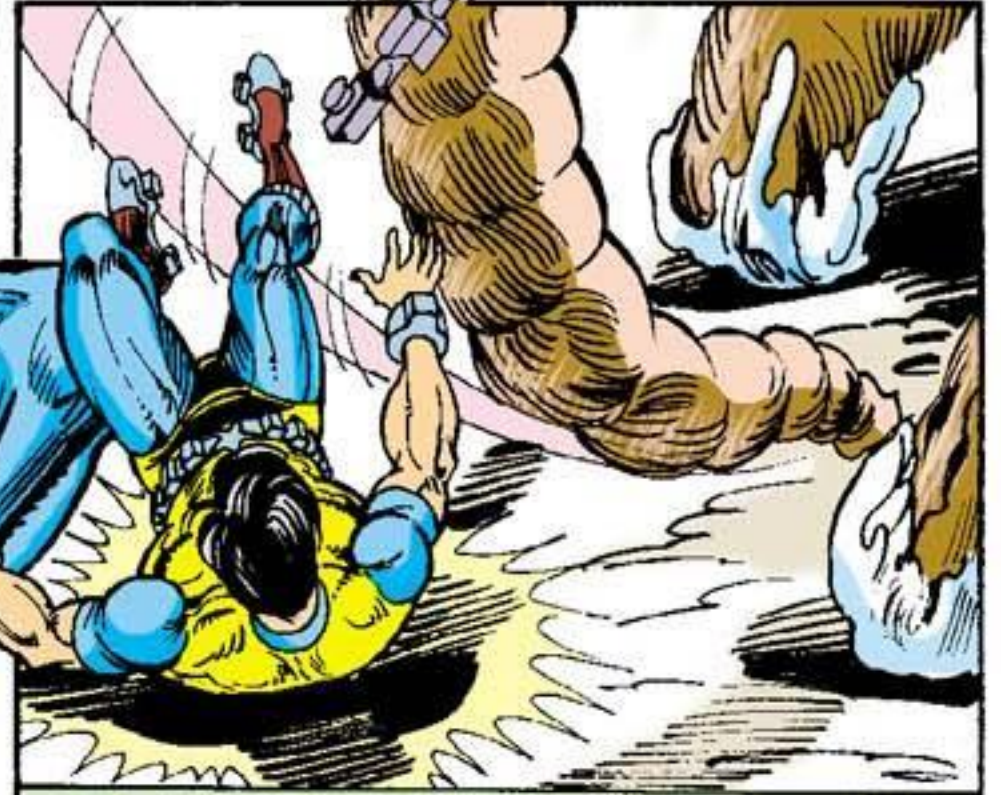
कहानी 19 पेज से जारी

और स्नोरीबो के बढ़ते कदम भी थम गए-
अरे! यह... यह क्या हो रहा है?
जड़ें मेरे बर्फीले शरीर को छेदती हुई अन्दर घुस रही हैं!
स्नोरीबो के कुछ कर पाने से पहले ही-
वह टुकड़ों में बंट चुका था-
हा हा हा! मुझे रोकने चला था!
ध्रुव ने भी 'मैमोथ समस्या' का हल ढूंढ़ लिया था-
मैमोथ की शक्ति, शीत के कारण है! लेकिन वास्तव में ये गर्म खून वाला प्राणी है! और इसके शरीर के बाल इसकी ठंड से रक्षा करते हैं! अगर ये बाल नहीं हों तो मैमोथ पर भी ठंड का असर होगा, और तब इस पर काबू पाना आसान होगा! ...
...लेकिन इसके बालों को हटाया कैसे जाए?
इसको सैलून में ले जाने के लिए मनाना तो जरा मुश्किल है!

और यहां पर ऐसी कोई चीज नहीं है जो इसके बालों को जल्दी हटा सके! फिर... ओ यस! मुझे फिर से अपने दोस्तों की मदद लेनी होगी! ऐसे दोस्त जो इसके बालों को उखाड़ भी सकते हैं और जिनको ये कुचल भी नहीं सकता!
चिं चीं चींऽऽऽ चचूं चूं!
ध्रुव की पुकार के जवाब में-
ठंड की परवाह न करते हुए सैकड़ों चिड़ियां आकाश और पेड़ों से नीचे उतर आईं-
और मैमोथ के शरीर के बाल, किसी गंजे के सिर के बालों की तरह गायब होने लगे-
कुछ ही देर में मैमोथ के शरीर और ठंड के बीच में कोई रोक नहीं थी-
और सही जगह पर किया गया एक ही जोरदार वार-
कमजोर मैमोथ को ठंडी जमीन पर लुढ़का देने के लिए काफी था-

हमने दोनों मुसीबतों को खत्म कर दिया, ध्रुव! हम जीत गए!
यह जीत अधूरी है, वनपुत्र! हमको अभी तक न तो इनके मकसद का पता चला है, और न ही इनको भेजने वालों का!
पटाक
यह भी एक रहस्य है कि 'सैबर टूथ टाइगर' और 'मैमोथ' जैसे विलुप्त जाति के प्राणी जिन्दा होकर कहां से आ रहे हैं! कौन है इनको जिन्दा रखने वाला?
स्नोरोबो अभी जिन्दा है, वनपुत्र! और...और अब इसके अंग अलग-अलग होकर हम पर हमला कर रहे हैं!
ये जानकर उनको क्या करना है, जो कुछ ही देर में मरने वाले हों?
अब इससे कैसे निपटें, ध्रुव?
इससे मैं निपटूंगा! अगर लोहा लोहे को काटता है तो...
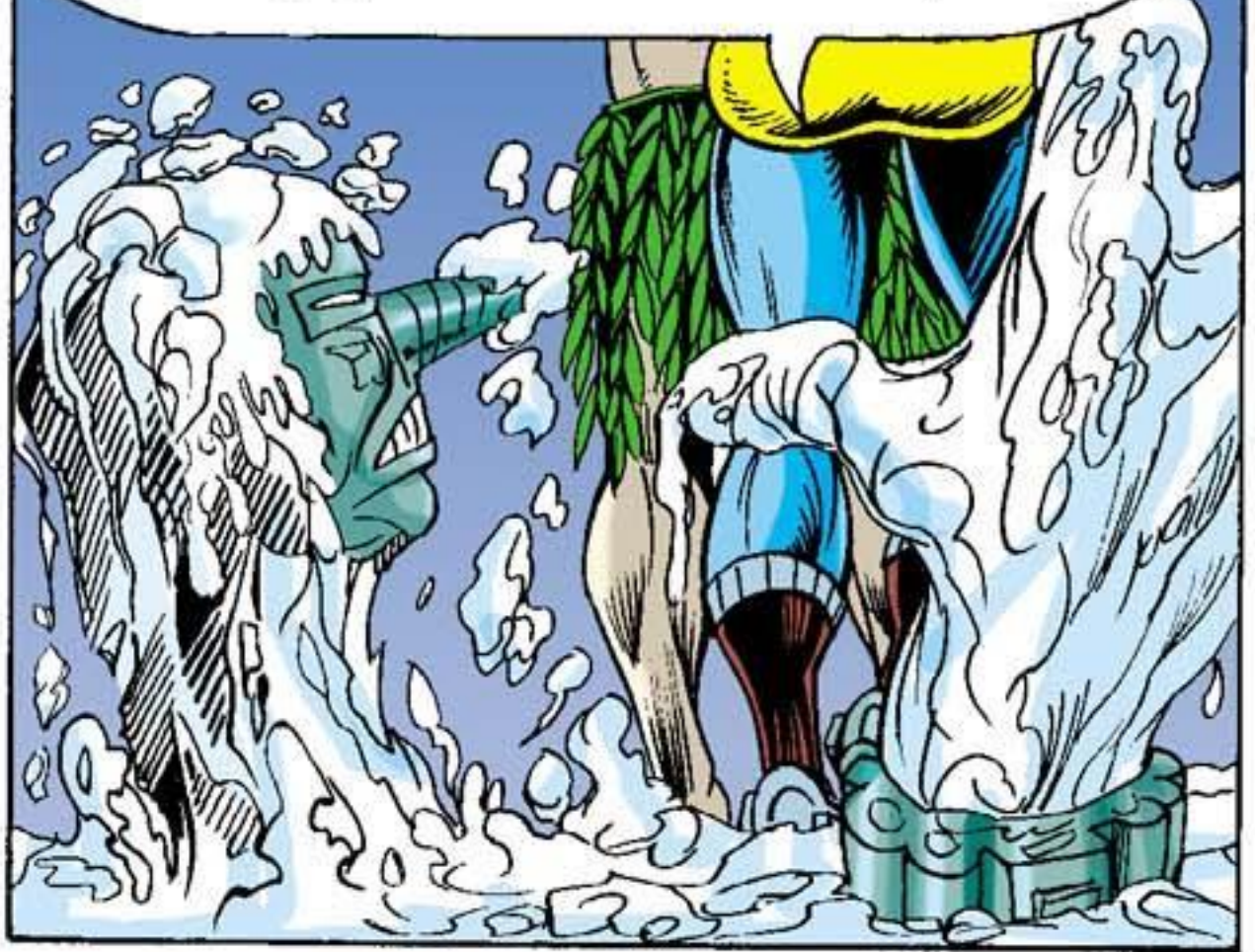
तो बर्फ भी बर्फ को काटेगी!

बर्फ मानव! यानी डॉक्टर वर्गीस! एकदम सही समय पर आए आप? लेकिन आप यहां तक आए कैसे?

राजनगर का मौसम रहस्यमय रूप से बदलते ही मेरा माथा ठनक गया था! बाहर निकलते ही मैमोथ के पैरों के निशान दिखे, उनका पीछा करते- करते ही मैं यहां चला आया!

लेकिन आप तो अपने- आपको सामान्य मानव बनाने के लिए कोशिश कर रहे थे?

कोशिश की! पर सफल नहीं हो पाया, ध्रुव!

मुझे रोकने में भी तू सफल नहीं हो पाएगा!

ओ! तेरी बर्फ फिर से जुड़ गई!

और अब तू मेरा शरीर तोड़ रहा है!

तू पाउडर जैसे बर्फ कण, स्नो का बना है! इसलिए तू बार- बार जुड़कर आकार ले रहा है! अगर तेरी बर्फ को सिल्ली की तरह 'पारदर्शी सख्त' बना दिया जाए तो तू कोई रूप नहीं ले पाएगा।

आsssह

डॉक्टर वर्गीस के बारे में जानने के लिए पढ़ें: **डॉक्टर वायरस एवं हत्यारा कौन?**

आऽऽऽह! अब काम खत्म हुआ! अब मुझे बताओ कि ये यहां पर किस कारण से आए थे!
ये लेने! पर हमको यह नहीं पता कि इस सिलेंडर में क्या है! यह बता सकने वाले सारे कर्मचारी भाग चुके हैं!
लगे हाथों यह भी बता देना बर्फ मानव कि इस बैग में रखे सिलेंडरों में क्या भरा है?
इन सभी सिलेंडरों में अलग-अलग किस्म के और मुश्किल से मिलने वाले 'सुपर कूलिंग कंसेन्ट्रेट' यानी 'अतिशीतक' के मिश्रण भरे हैं!
लेकिन फिर भी मैं इन पर और जांच करना चाहूंगा, ताकि यह पता लगा सकूं कि इनका ऐसा क्या घातक उपयोग हो सकता है, जो ऐसे अपराधिक प्रवृत्ति के लोगों के काम आ सके!
ठीक है! मैं इस फैक्ट्री के मालिक से बात कर लूंगा!
आप इन सिलेंडरों को ले जाइए!
ले जाइए, हुंह!
बापू का माल समझा है क्या?
ओ! इसके धातु के छल्लों ने इसके सिल्ली जैसे शरीर को छील कर फिर से मुलायम स्नो का बना दिया है!
ये हमारा पीछा नहीं...
...आक्!
ये तो गया!
अब ला! ये सारे सिलेंडर मुझे दे दे!
सिलेंडर इसके हाथ नहीं लगने चाहिए, वनपुत्र!
पर मैं करूं तो क्या? इसके हाथ-पैर तो चारों तरफ से छीना-झपटी मचा रहे हैं!
इसके अंग अलग होने के बाद भी हरकत कर रहे हैं! जरूर ये सिर उनको निर्देश दे रहा है! इसको तोड़ दूं तो हाथ-पैर अपने-आप बेकार हो जाएंगे! ओह!
मैं तो सिर तक पहुंच ही नहीं पा रहा हूं!

आऽऽऽह! बदन, बर्फ में ढक रहे हैं!
अब मुझमें सिलेंडरों को थामे रहने की ताकत भी नहीं है!
इससे निपटने का कोई रास्ता भी तो समझ में नहीं आ रहा है!
इसको रोकना ही होगा, वनपुत्र! वर्ना हम षड्यंत्रकारियों तक कभी पहुंच नहीं पाएंगे! बर्फीले शिकंजों को खोलना होगा!
यस! एक तरीका है! है!
'सिग्नल फ्लेयरों' की मदद लेनी होगी! ये रोशनी के साथ-साथ तेज गर्मी भी पैदा करते हैं!
इनकी गर्मी 'स्नोरोबो' के चारों तरफ की बर्फ को पिघलाकर गर्म पानी बना देगी! और हम आजाद हो जाएंगे!
आजाद हो जाएंगे? पर कैसे? अरे, सचमुच! शिकंजा अपने आप खुलकर गिर रहा है! यह चमत्कार तुमने कैसे किया, ध्रुव?
कड़ाक
ये बर्फ का प्राणी था, वनपुत्र! और इसीलिए इसके सिर द्वारा इसके अंगों को निर्देश भेजने का माध्यम भी बर्फ ही होनी चाहिए थी! यह ख्याल आते ही मैंने इसके सिर और अंगों के बीच की बर्फ पिघला दी, और निर्देश न मिलने के कारण हाथ निष्क्रिय हो गए! देखो मैं इसके सिर को तोड़ रहा हूं, लेकिन इसका कोई भी अंग इसे बचाने नहीं आ रहा है!
कमाल है, ध्रुव! तुमने जरूर लाइन तोड़कर भगवान से अक्ल बटोरी है! इतने खतरनाक प्राणी को कितनी आसानी से खत्म कर दिया तुमने!
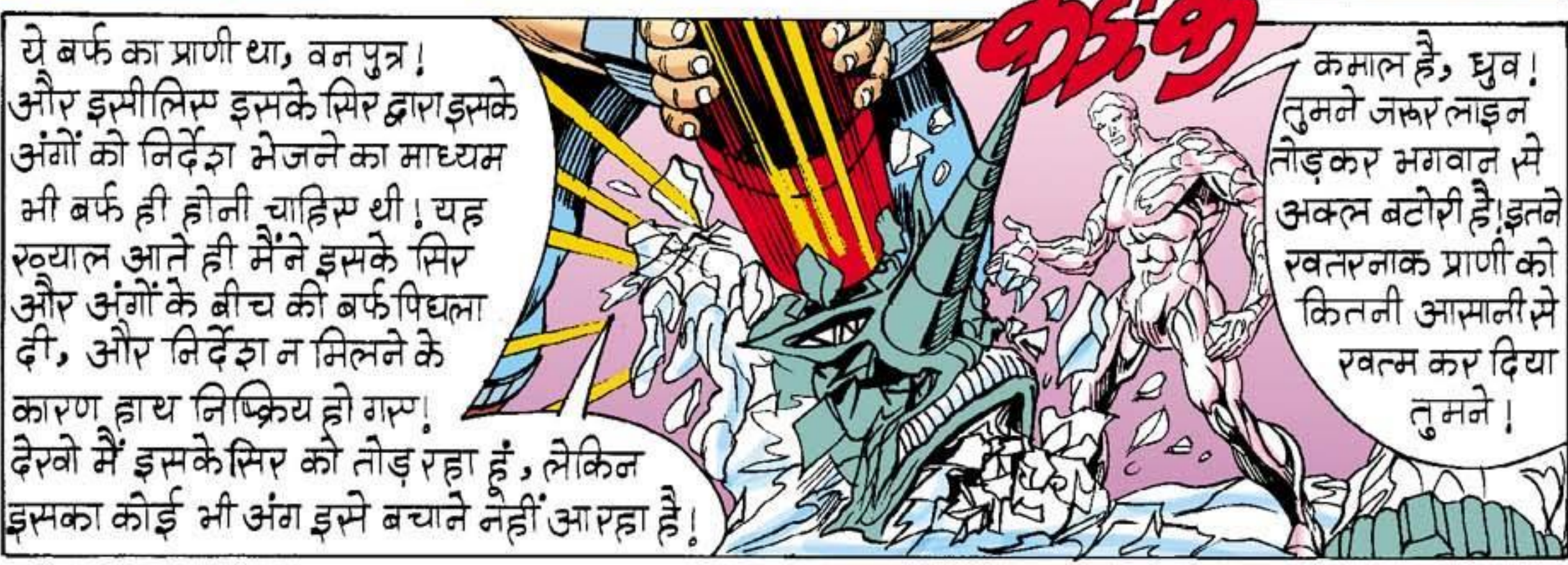
इसी वक्त - किसी गुप्त स्थान पर-
इस 'कोल्ड स्टोरेज' में हम कब तक छुपे रहेंगे?
जब तक वे सिलेंडर हमारे पास नहीं आ जाते! अब बस! वे आते ही होंगे!
सिलेंडर नहीं आएंगे!
अभी खबर मिली है कि हमारा शीत सैनिक नष्ट कर दिया गया है!
ओफ़! वे सिलेंडर हमारे लिए बहुत जरूरी हैं! वे हमारा ऊर्जा स्रोत हैं!
हमको तुरन्त ऊर्जा देने वाली एक दवाई है! अंटार्टिका पर शीत राज से संपर्क करना होगा!
और फिर-
हमने आपको सारा घटनाक्रम बता दिया! अब हमारे लिए क्या आदेश है?
वे सिलेंडर हमारे लिए बहुत जरूरी हैं! चाहे पूरे शहर को नष्ट करना पड़े, लेकिन सिलेंडर तो लेकर ही आने होंगे!
जाओ! वक्त बहुत कम है!
जो आज्ञा शीतराज! अब या तो मानव हमारा भोजन हमको देंगे या फिर शहर पर बरसती मौत को देखेंगे!
राजनगर में-
ये बहुत तीव्र शीतक है ध्रुव! ये एक सिलेंडर डललेक या नैनी लेक जैसी बड़ी झीलों को भी जमाने के लिए पर्याप्त है!
लेकिन ये समझ में नहीं आ रहा कि जो पहले से ही जमा था, वह इसको ले जाने का प्रयास क्यों कर रहा था?

जवाब वही दे सकता है जिसने 'स्नोरोबो' को सिलेंडर लाने के लिए भेजा था! और उस तक पहुंचने का कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है!
ध्रुव, षड्यंत्रकारियों तक पहुंचना चाहता था-
और षड्यंत्रकारी उस तक-
ऐ, रुक जाओ! पैट्रोल पंप बन्द हो चुका है! अब तुम वहां नहीं जा सकते!
RAKE PETROIC
RP
तुम्हारे पास वायरलेस है?
है... है! प... पर क्यों?
पूरे शहर में खबर कर दो कि शैतानों को सिलेंडर दे दें!
वर्ना इस शहर का हाल ऐसा होगा!
ओ! ये जमीन में गड्ढा करके बर्फ भर रहे हैं!
जमीन गुब्बारे की तरह फूल रही है!
धड़ाम
उड़ जाएगा पूरा शहर इस पैट्रोल पंप की तरह।
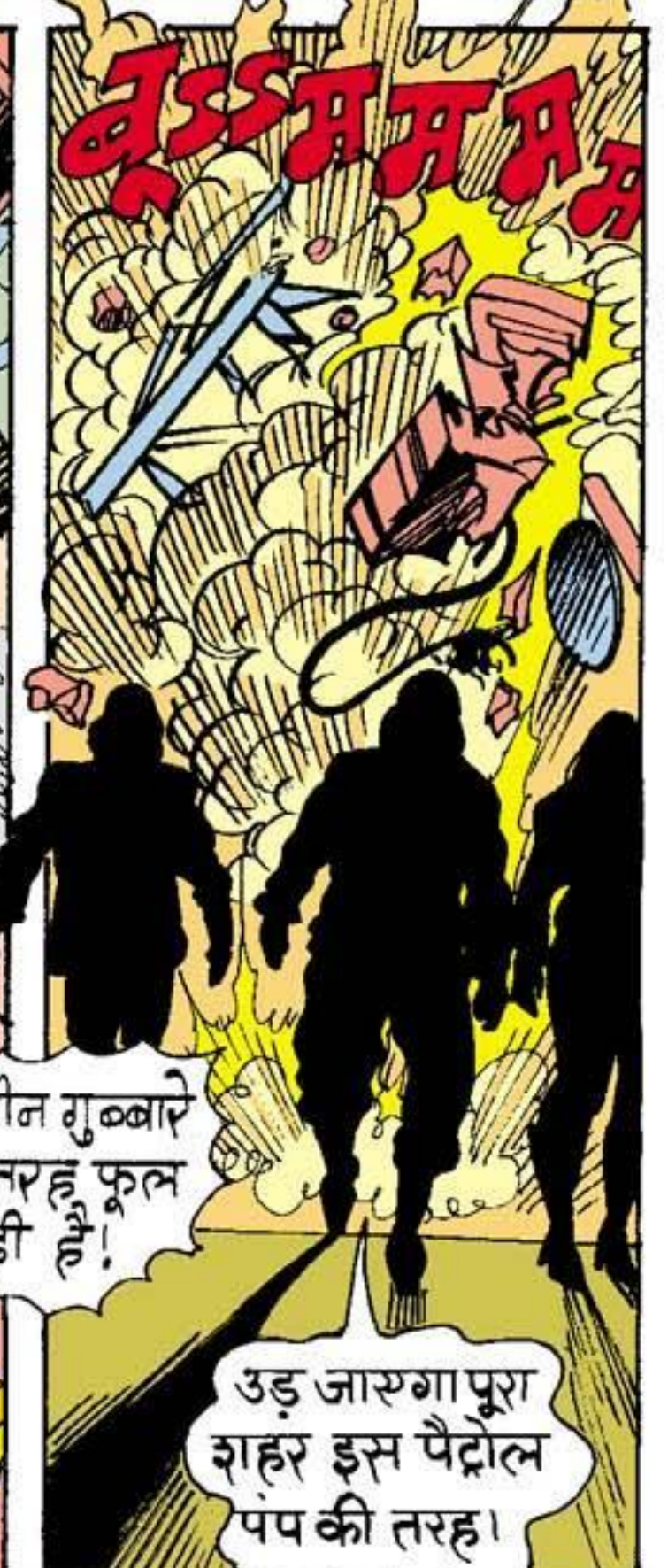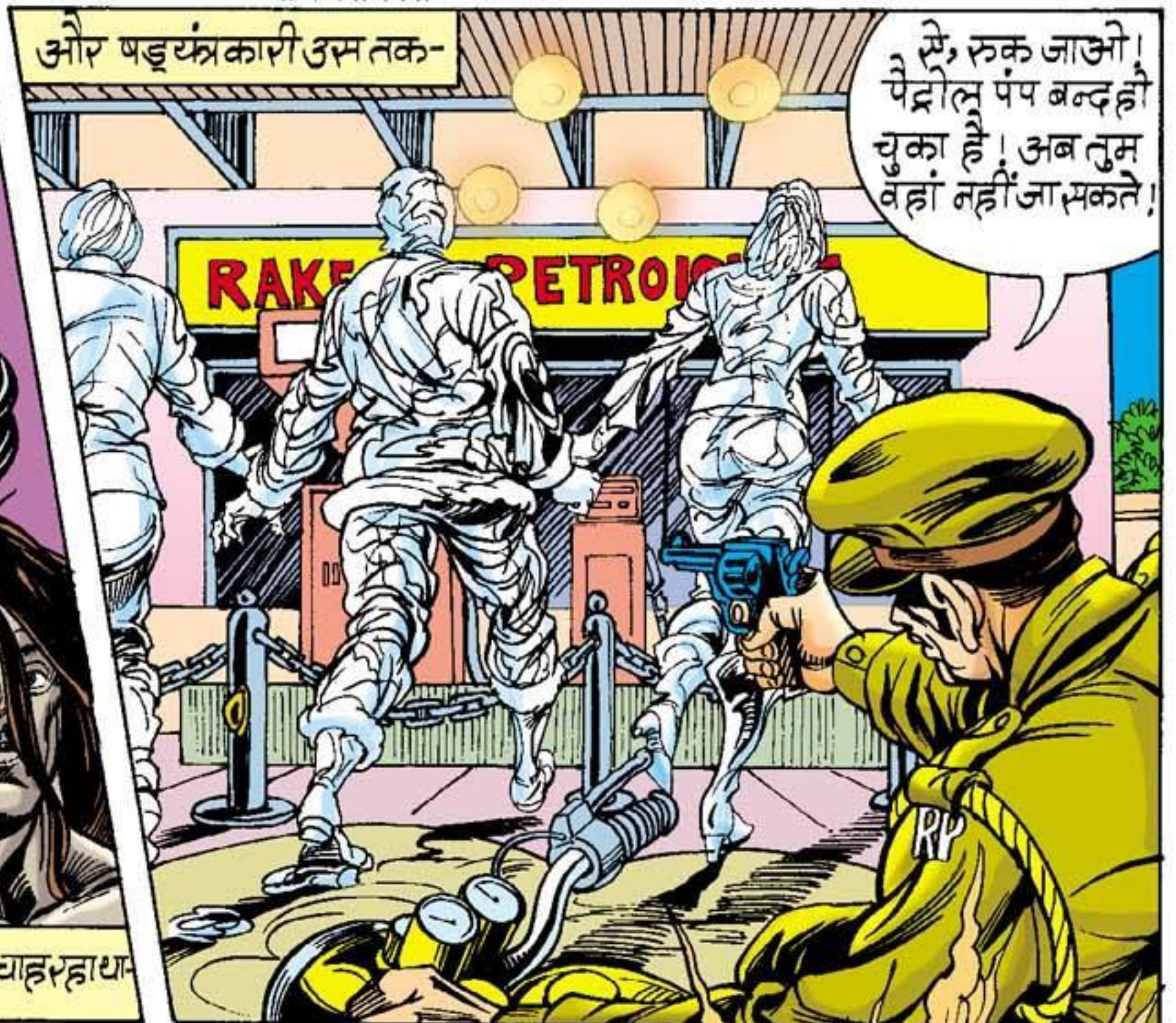
पुलिस हैडक्वार्टर!... पुलिस पैट्रोल 362 बोल रहा हूं! केशव नगर से! यहां... यहां पर बर्फ के बने कुछ प्राणियों ने पैट्रोल पंप को उड़ा दिया है!...

... वे अपने आपको शीतान कहते हैं! और कोई सिलेंडर मांग रहे हैं! न जाने कौन सा सिलेंडर?

ओ माई गॉड!

खतरा जरूरत से ज्यादा गंभीर है! आओ, वनपुत्र!

ओह! चारों तरफ गहरी धुंध छाती जा रही है! मुझे तो अपना हाथ तक नजर नहीं आ रहा है!
मैं तो अस्थमा का मरीज हूं! ये धुंध खौं... खौं...तो मेरी जान ले लेगी!
अस्थमा से मरोगे तो फिर हम क्या करेंगे?
यह शुभ कार्य मुझे करने दो! स्नोबाल को!
आऽऽऽह!
तू इनका नेता लगता है! बता कि हमारे सिलेंडर कहां हैं? अब तक वे हमारे पास क्यों नहीं आए? बता वर्ना तुझे यहीं फांसी पर लटका दूंगा!
आऽऽऽह! क... कौन से सिलेंडर की बात कर रहे हो? हमको कुछ नहीं पता?
मुझे पता है! लेकिन वे सिलेंडर तुम्हारे नहीं हैं! इसलिए बिना कारण जाने वे तुमको नहीं दिए जा सकते!
पहले तुम बताओ कि उन प्रशीतकों में भरे सिलेंडरों से तुमको क्या करना है? तुम तो पहले से ही जमे हुए हो?
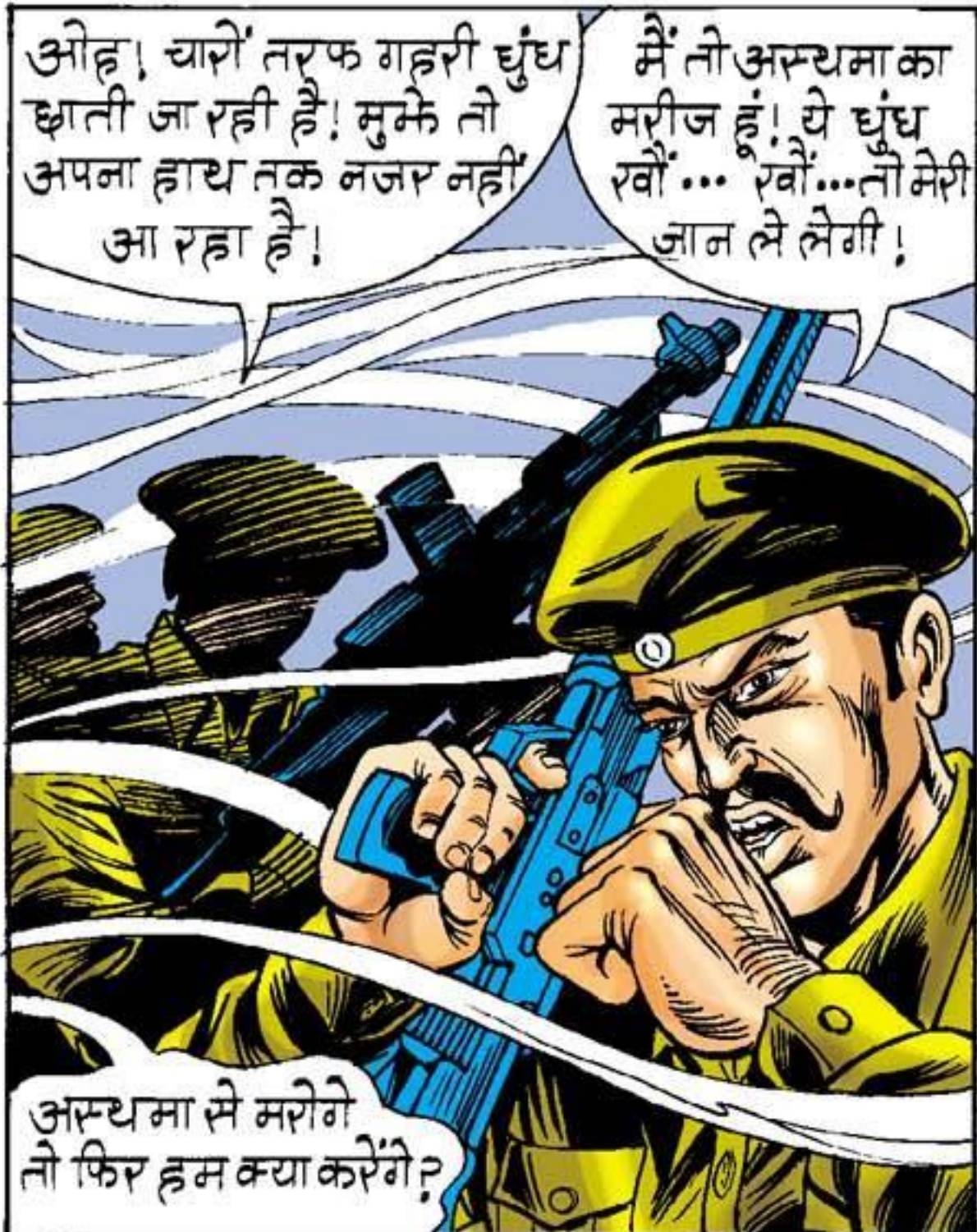
उसी 'स्नोरोबो' की तरह जो इन सिलेंडरों को लेने आया था!
समझा! यानी तू ही वह इंसान है! जिसने हमारे साथी शीतान को नष्ट किया है! इसका मतलब सिलेंडर तेरे ही पास है!
तुम्हारे पास इस वक्त हमारे मतलब की दो चीजें हैं! प्रशीतक से भरे सिलेंडर और तुम्हारी जान!
तुम दोनों में से कोई एक चीज ही अपने पास रख सकते हो! या तो हम सिलेंडर लेंगे या तुम्हारी जान!
मैं तुम्हारी हर संभव मदद करूंगा! पहले बताओ कि तुम लोग हो कौन? इसरूप में कैसे रहते हो? कहां से आए हो? और प्रशीतक की जरूरत तुमको क्यों है?
ओफ!
धड़ाम
तेरे सवालों का जवाब देने में ज्यादा समय लगेगा!
उससे जल्दी तो हम तेरी जान ले लेंगे!
उससे पहले तुमको चूर-चूर कर देगा वनपुत्र!
कड़क
आऽऽऽह! मैं तो फिर से जुड़ जाऊंगा!
लेकिन अब तू नहीं बचेगा!
खत्म कर दो इस जंगली को भी!

वनपुत्र के लिए अब दो शैतानों को संभालना मुश्किल हो रहा था-

गरड़ग
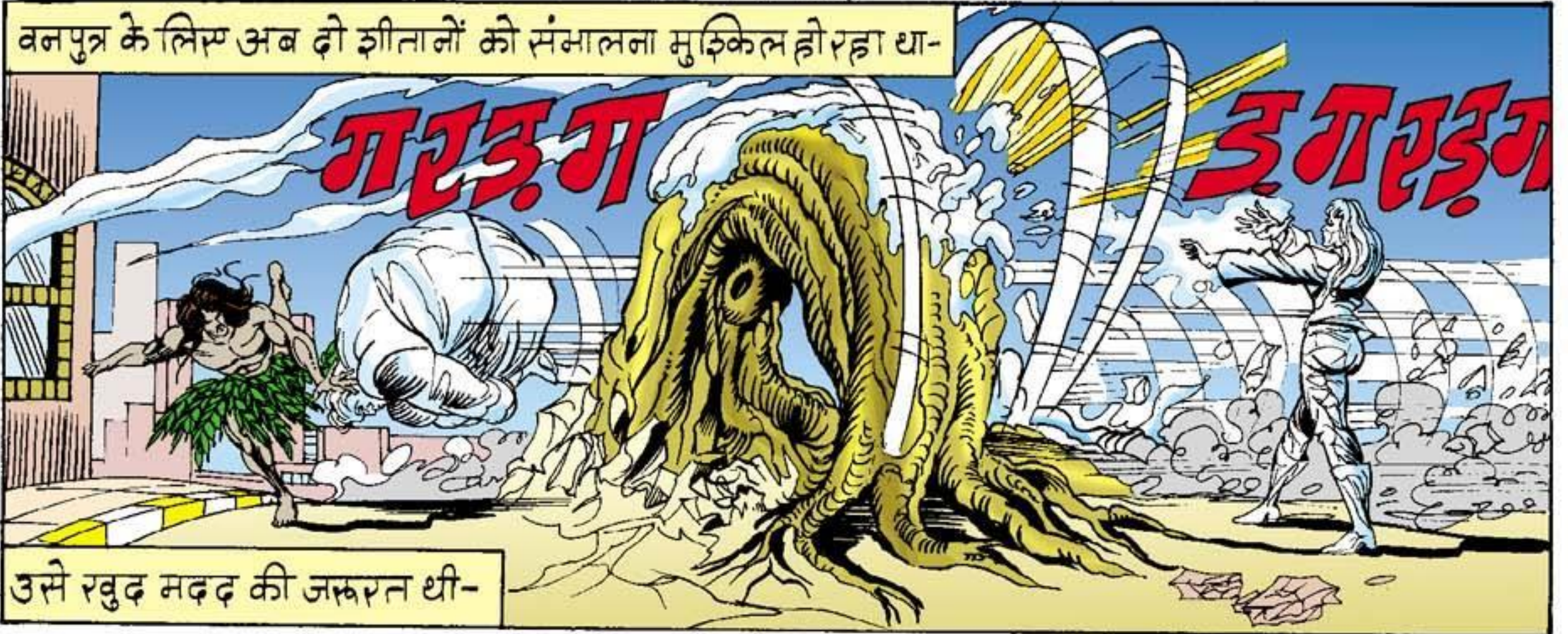
ड़गरड़ग

उसे खुद मदद की जरूरत थी-

आऽऽऽह! दम घुट रहा है! और इस कड़ी बर्फ को मैं तोड़ नहीं पा रहा हूं! क्या सचमुच में मैं अपनी आखिरी सांस ले चुका हूं!
वनपुत्र की भी गिनती की ही सांसें बची थीं-
आऽऽऽह! हर बार इस बर्फ के गोले का आकार बढ़ता जा रहा है। अगली बार ये मुझसे टकराया तो मेरी एक भी हड्डी साबुत नहीं बचेगी!
वनपुत्र ने बचाव के लिए जड़ों की दीवार खड़ी की तो-
लेकिन बर्फीले गोले की उस टक्कर ने जड़ों को जड़ समेत उखाड़ फेंका-
ध्रुव तो बिना लड़े साक्षात मौत से भी हार मानने वाला नहीं था-
और अपनी ही जड़ के नीचे दबा वनपुत्र मौत को अपनी तरफ बढ़ता देखने लगा-
आऽऽऽह! ये क्या कर रहा है तू? मुझे वैन के टूटे टुकड़ों पर गिराना चाहता है! पर मुझे चुभन नहीं होती है!

ये... गिर तो गया है! अब मुझे इसको कुछ पलों के लिए दबाए रखना होगा! ताकि...
लेकिन-
तू ताकतवर जरूर है, लेकिन मुझे दबाए रखने में सफल नहीं होगा! देख, वैन के मशीनी पुर्जे मेरे शरीर में घुस गए हैं! बगैर मुझे दर्द पहुंचाए! तेरी ये बचकानी चाल तुझे बचा नहीं पाएगी!
यही तो मुझको करना है!
अब एक तो इन पुर्जों का वजन एस्कीमों की फुर्ती को कम कर देगा! और जहां-जहां पर पुर्जे घुसे हुए हैं, वहां-वहां की बर्फ पुर्जों में समाई गर्मी के कारण कमजोर हो जाएगी!
इतनी कमजोर कि मैं उसको तोड़ सकूं!
कड़क
और आजाद होकर लम्बी सांस ले सकूं!
हाssss

कहानी 35 पेज से जारी

शरीर में 'प्राणवायु' का फिर से संचार होते ही, ध्रुव की शक्ति और स्फूर्ति भी तुरन्त वापस आ गई-
और ध्रुव के उस भीषण वार ने, धातु के पुर्जों के कारण पहले ही कमजोर पड़ चुके बर्फीले जोड़ों को अलग-अलग कर दिया-
ओफ! मैं फिर से जुड़ सकता हूं लेकिन धातु के ये भारी टुकड़े मेरे अंगों को ठीक से जुड़ने नहीं देंगे!...
...आsssह!
तड़ाक
वनपुत्र पर फिर से दोहरा हमला शुरू हो गया था-
मैं ठंडी 'स्नो' से इसके अंगों को सुन्न कर दूंगी! फिर तू इसको आराम से कुचल सकेगा, आइसबाल!
धन्यवाद, स्नोगर्ल!
लेकिन आइसबाल को रास्ता बदल देना पड़ा-
ओफ! अब ये कहां से आ गया?
तड़ाक
इससे मैं निपट लूंगी आइसबाल! तुम जंगली को कुचलने का प्रयास जारी रखो!

धन्यवाद, ध्रुव! अब मैं आइसबाल से लिपट सकता हूं!
मेरे बीज पेड़ बनकर इतनी देर तो शीत का मुकाबला कर ही सकते हैं कि आइसबाल को 'स्नोरीबो' की तरह तोड़ सकें!

लेकिन-
ओह! पेड़ इसको छूते ही तुरंत मुर्झा गए!
मेरा तापमान शून्य से कई डिग्री नीचे है, जंगली!
तेरे पौधे इतनी ठंड नहीं सह सकते!

ओह! अब तो खड़े हो सकने की शक्ति भी नहीं बची है!
कड़ड़च
वनपुत्र! मैं आ रहा हूं!
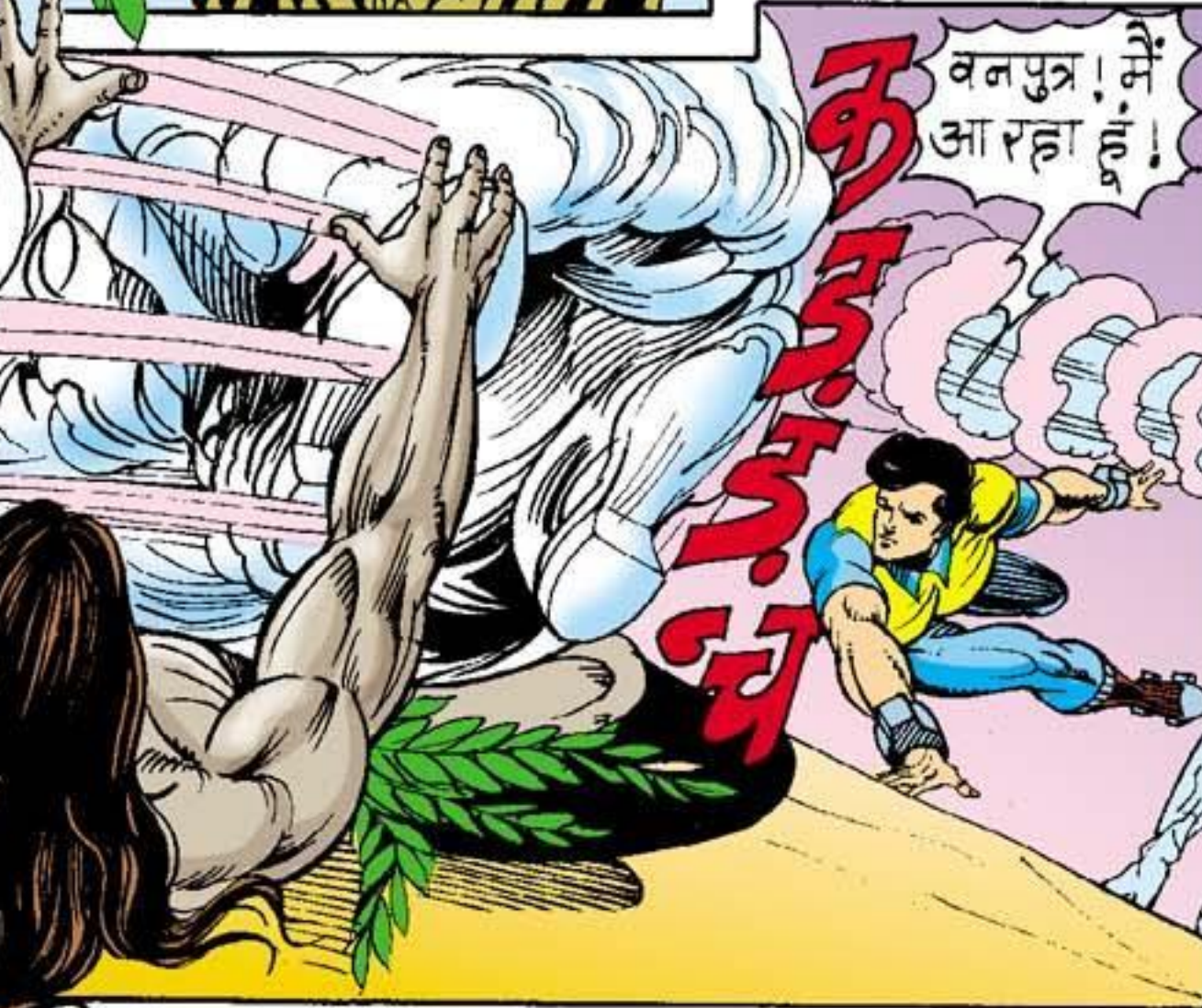
देख पाएगा तभी जाएगा न! तू कहीं नहीं जाएगा!
यहीं पर मरेगा तू!
ओह! ये धुंध! कुछ भी नजर नहीं आ रहा है!

लेकिन आंख अकेली ऐसी 'इंद्रिय' नहीं है जो किसी को ढूंढ सके! ढूंढने का काम नाक जैसी अन्य इंद्रिय भी कर सकती है!
वाऊ
भौंऽऽऽ वाऊ वाऊ!
ध्रुव की पुकार पर, उसकी गंध को सूंघते आए कुत्ते ने-

गंध के सहारे ही ध्रुव को वनपुत्र तक पहुंचा दिया-
वनपुत्र!
हट जाओ, ध्रुव! वर्ना तुम भी कुचले जाओगे!
अगर मेरे पेड़ इसको नहीं रोक सके तो तुम क्या रोकोगे?

इसको तुम ही नष्ट करोगे वनपुत्र! और वह भी अपने पेड़ों के जरिए! बस, पेड़ों का प्रयोग तुमको कुछ अलग तरीके से करना पड़ेगा! सुनो!
और इस बार जब आइसबाल वापस आया-
अच्छा! तू फिर मेरे रास्ते में पेड़ उगा रहा है! लेकिन तू इस बार भी असफल होगा, जंगली!
अरे! अरे! यह क्या? मैं अपनी गति और दिशा को नियंत्रित नहीं कर पा रहा हूं! पर क्यों?
अरे! इस बार पेड़ के अन्दर से कोई पदार्थ मुझ पर गिर रहा है! लेकिन यह भी जम जाएगा! बर्फ को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता!
धड़ाम
धाड़
कड़ाक
तुझ पर द्रव गिराने वाला पेड़ 'रबर ट्री' है, और तेरे ऊपर गिरने वाला पदार्थ कच्ची रबर का दूध है! इसकी मोटी पर्त ने तुझे एक विशाल गेंद बना दिया है! और तू टप्पे खाता घूम रहा है!
जल्दी ही- कई जगह टकराने के बाद-
आऽऽऽह! इस थैले के अंदर मेरा बर्फीला शरीर चूर-चूर हो गया है! मैं... मैं कुछ नहीं कर सकता! कुछ नहीं!
अब सिलेंडर हासिल करना तुम्हारी जिम्मेदारी है, स्नोगर्ल!
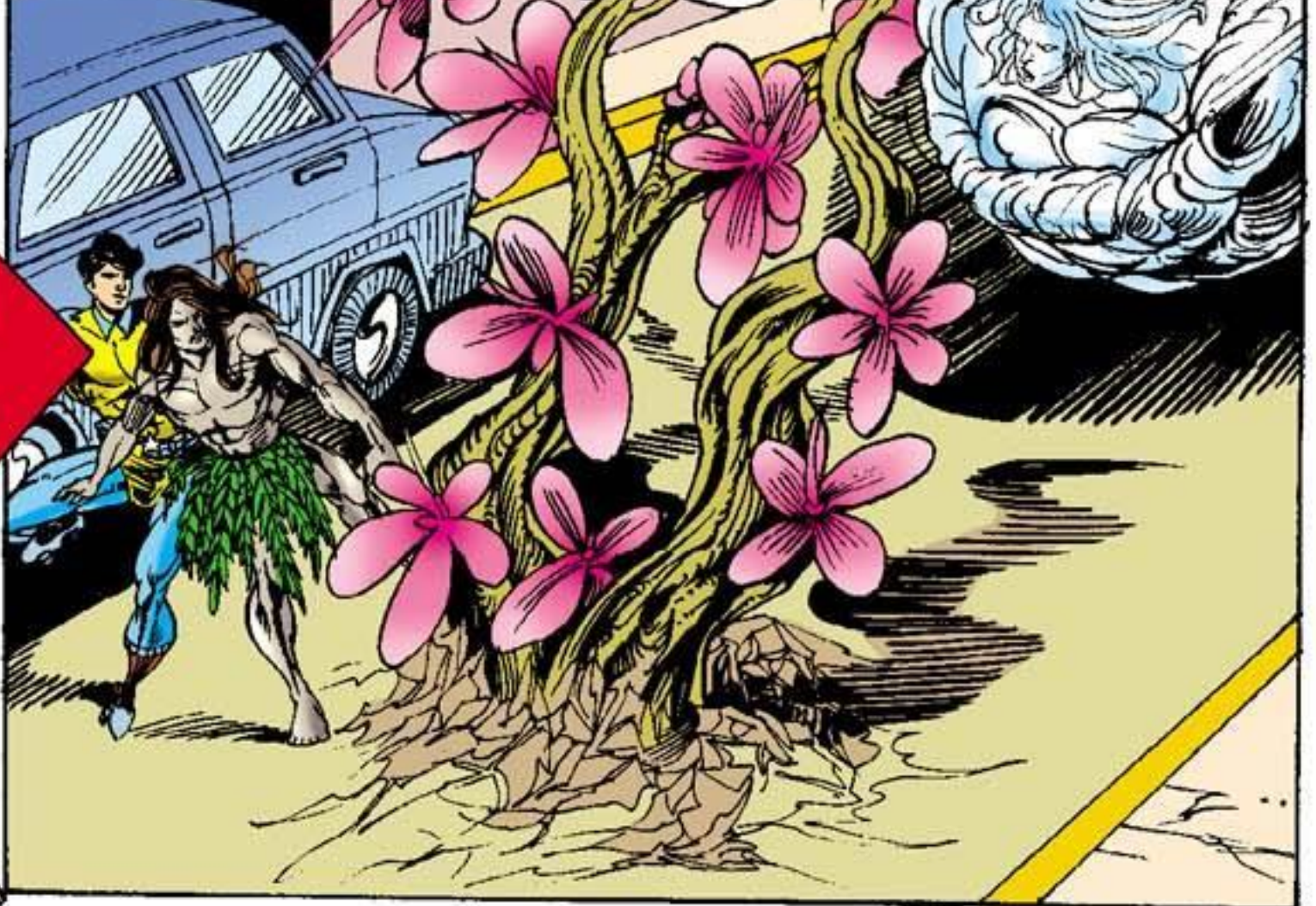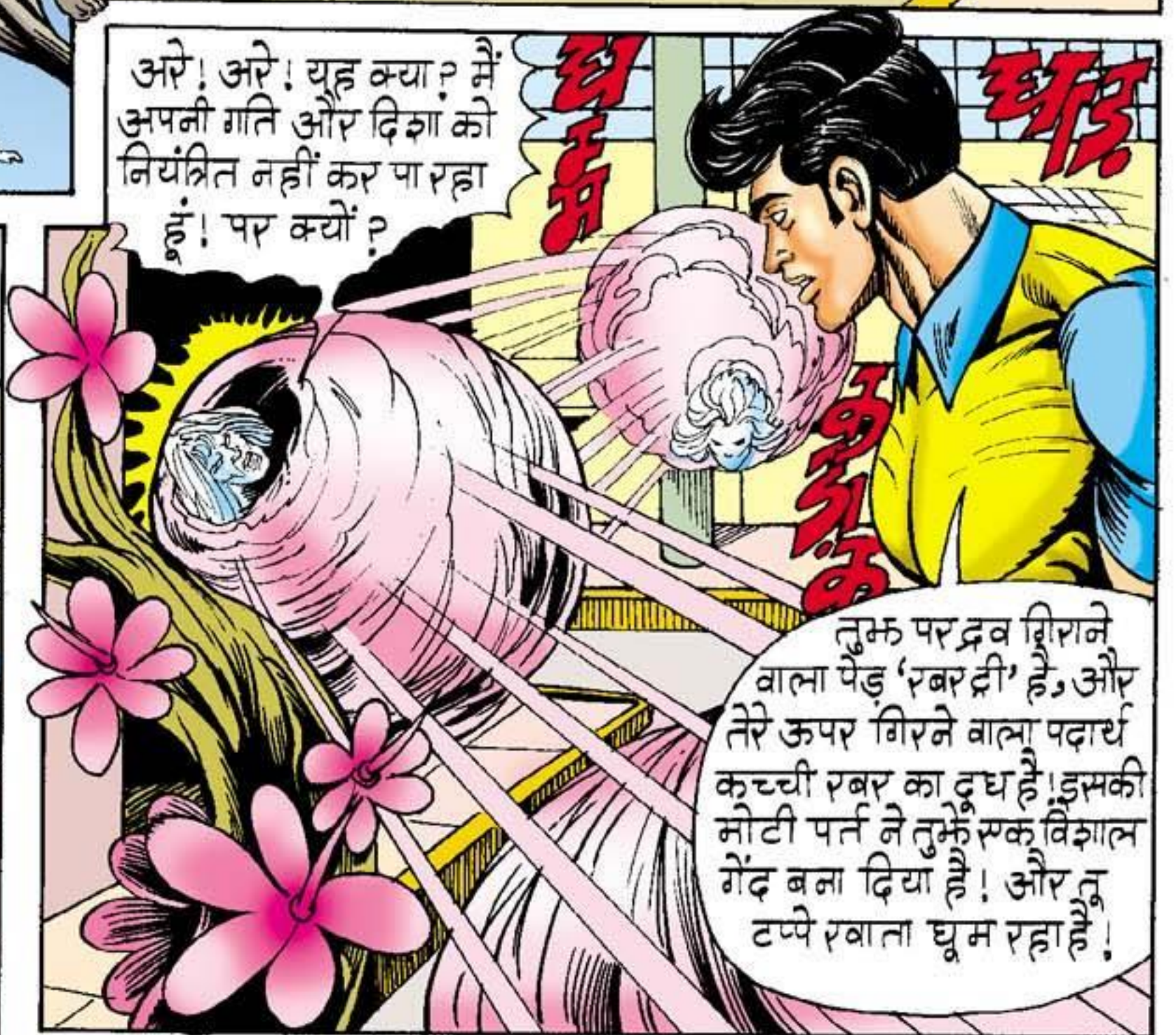
जरूर करूंगी! क्योंकि मैं वह गलती नहीं करूंगी जो तुम दोनों ने करी है! शीतराज के आदेश को भूलकर तुम सिर्फ दो मानवों से लड़ते रह गए! जबकि हमको पूरे शहर पर आफत ढानी थी!... अब मैं अपने स्नो के शरीर को हवा से भी हल्का करके उडूंगी! और आकाश से आफत टूटेगी इस शहर पर!
ये क्या करने जा रही है, ध्रुव?
जल्दी ही पता चल जाएगा वनपुत्र! इस पर नजर रखे रहो!
आकाश में तैरते बादल एकाएक शीशे के टुकड़े जैसे क्यों चमकने लगे हैं?
इनका आकार भी बढ़ रहा है!
आकार नहीं बढ़ रहा है! ये बादल जमीन के और पास आ रहे हैं! ये गिर रहे हैं जमीन पर!
पर कैसे?
क्योंकि मैंने अपनी 'स्नोपॉवर' से इनको ठोस बर्फ का बना दिया है!
और अब ये उल्का के टुकड़ों की तरह, राजनगर से टकराएंगे और पूरे शहर को सपाट जमीन में बदल देंगे!

ऐसा नहीं होने देंगे हम! किसी भी कीमत पर नहीं!

मैं तुमको इस लायक ही नहीं छोड़ूंगी कि तुम कुछ करने की सोच भी सको! इन बादलों को सिर्फ मैं ही रोक सकती हूं! सिलेंडर मिलने के बाद! तुम लोगों के पास तीन मिनट से ज्यादा वक्त नहीं है!

वनपुत्र! अपनी सारी शक्ति लगाओ! एक विशालकाय वृक्ष का निर्माण करो!

जो इन हिम बादलों को हवा में ही रोक ले!

ऐसा मैं कर सकता हूं, ध्रुव! लेकिन उसके लिए मुझे गहन ध्यान लगाना पड़ेगा! अगर मेरा ध्यान टूटा तो वृक्ष के साथ-साथ मेरी जान भी चली जाएगी!

ऐसा नहीं होगा वनपुत्र! न तुम्हारा ध्यान टूटेगा और न ही राजनगर की एक भी बिल्डिंग!

वनपुत्र गहन ध्यान में लीन हो गया! और जमीन को फोड़कर निकली बेशुमार जड़ें आपस में गुंथकर एक 'महावृक्ष' का निर्माण करने लगीं-

ये सफल नहीं होगा! मैं तोड़ूंगी इसका ध्यान!
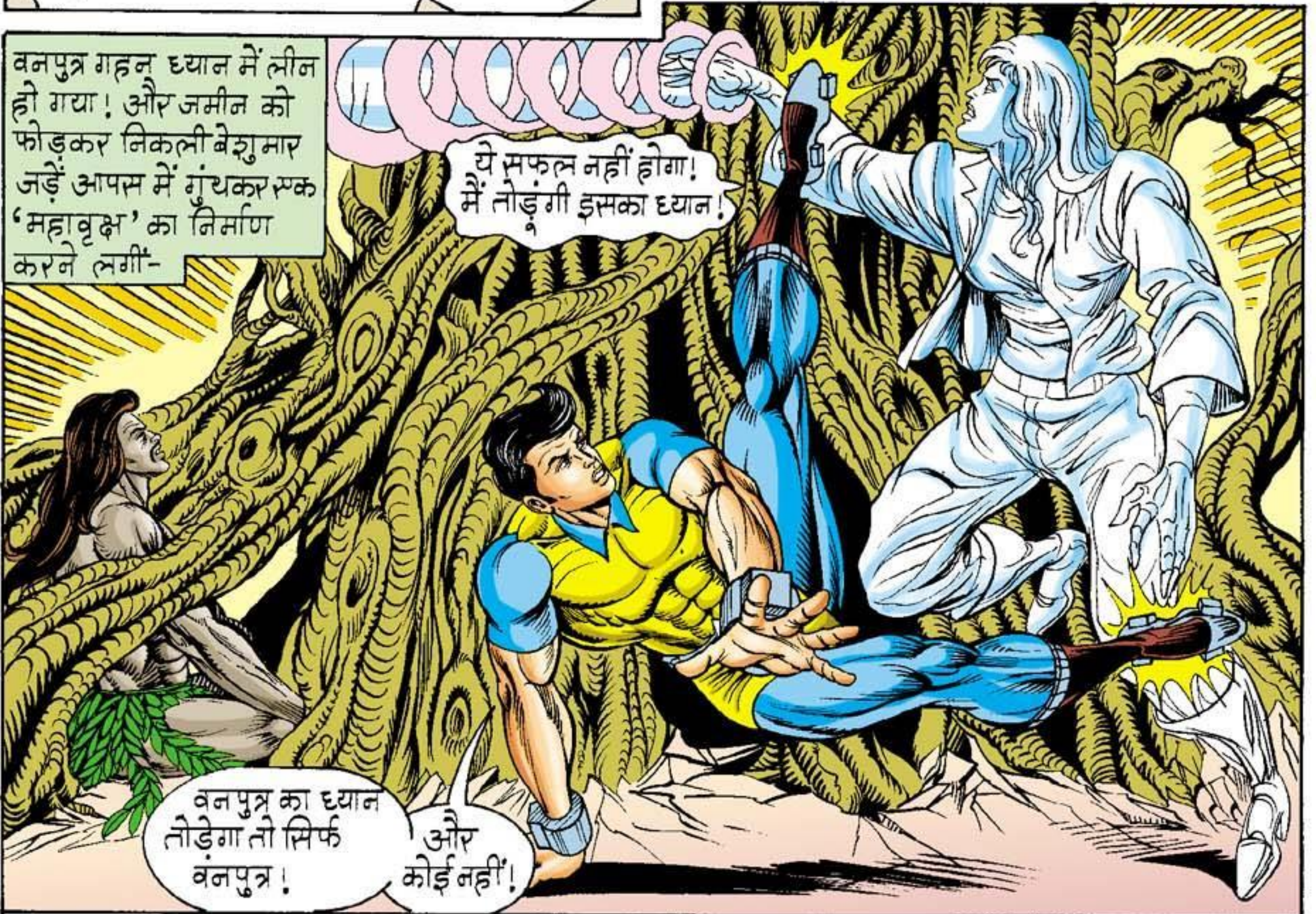
वनपुत्र का ध्यान तोड़ेगा तो सिर्फ वनपुत्र!

और कोई नहीं!

पहले तुझे रास्ते से हटाना होगा!
ओफ़! अगर ये कामयाब हो गई तो मेरे साथ वनपुत्र भी खत्म होगा और राजनगर भी! मुझे पलटकर हमला करना होगा!
ध्रुव 'स्नोगर्ल' का ध्यान, वनपुत्र पर से हटाने में सफल हो गया था-
वनपुत्र के ध्यान के साथ-साथ पेड़ की शाखाओं का फैलाव भी बढ़ता जा रहा था-
बर्फीले बादल, शाखाओं को तोड़ते हुए खुद भी चूर-चूर हो रहे थे-
लेकिन फिर भी कई लोगों को वनपुत्र पर भरोसा नहीं था-
और ऐसे ही लोगों में से एक था-
डॉक्टर वर्गीस उर्फ बर्फ मानव-
मुझे कुछ करना होगा! रोकना होगा इस विनाश को! वर्ना सब कुछ खत्म हो जाएगा!
ध्रुव ने स्नोगर्ल को व्यस्त रखने का तरीका ढूंढ लिया था-
य... यह तू मुझ पर क्या फेंक रहा है?
टूटी वैन के टैंक में भरा हुआ पैट्रोल!
यह भी जम जाएगा! मुझे नुकसान नहीं पहुंचा पाएगा!

गलत! पैट्रोल तुम्हारे शरीर जितने तापमान पर नहीं जमता है स्नोगर्ल! और रही नुकसान न पहुंचा सकने वाली बात तो मैं भी यही चाहता हूं कि तुमको कोई जानी नुकसान न पहुंचे! अब ये आग तुम्हारे शरीर को गलाती रहेगी, और तुम उसे जमाती रहना! टाइम अच्छा पास हो जाएगा!
तब तक मैं तुमको पकड़े रखने का कोई रास्ता भी ढूंढ़ लूंगा!
तू जब तक कुछ सोचेगा तब तक मैं यहां से जा चुकी होऊंगी! क्योंकि हमारा काम हो गया है!
उधर देख!
आइसबाल सिलेंडर लेकर भाग रहा है! लेकिन...लेकिन इसको सिलेंडर कहां से मिले?
मैंने दिए!
ताकि राजनगर और उसके निवासियों पर आया खतरा टल जाए!
ओफ! तुमने ये क्या किया डॉक्टर वर्गीस? हमने उनको हरा दिया था! अब वे हम पर नहीं, बल्कि हम उन पर हावी थे!
शांत हो जाओ ध्रुव!
उसको मैंने प्रशीतकों वाले नहीं बल्कि ऑक्सीजन से भरे सिलेंडर दिए हैं!
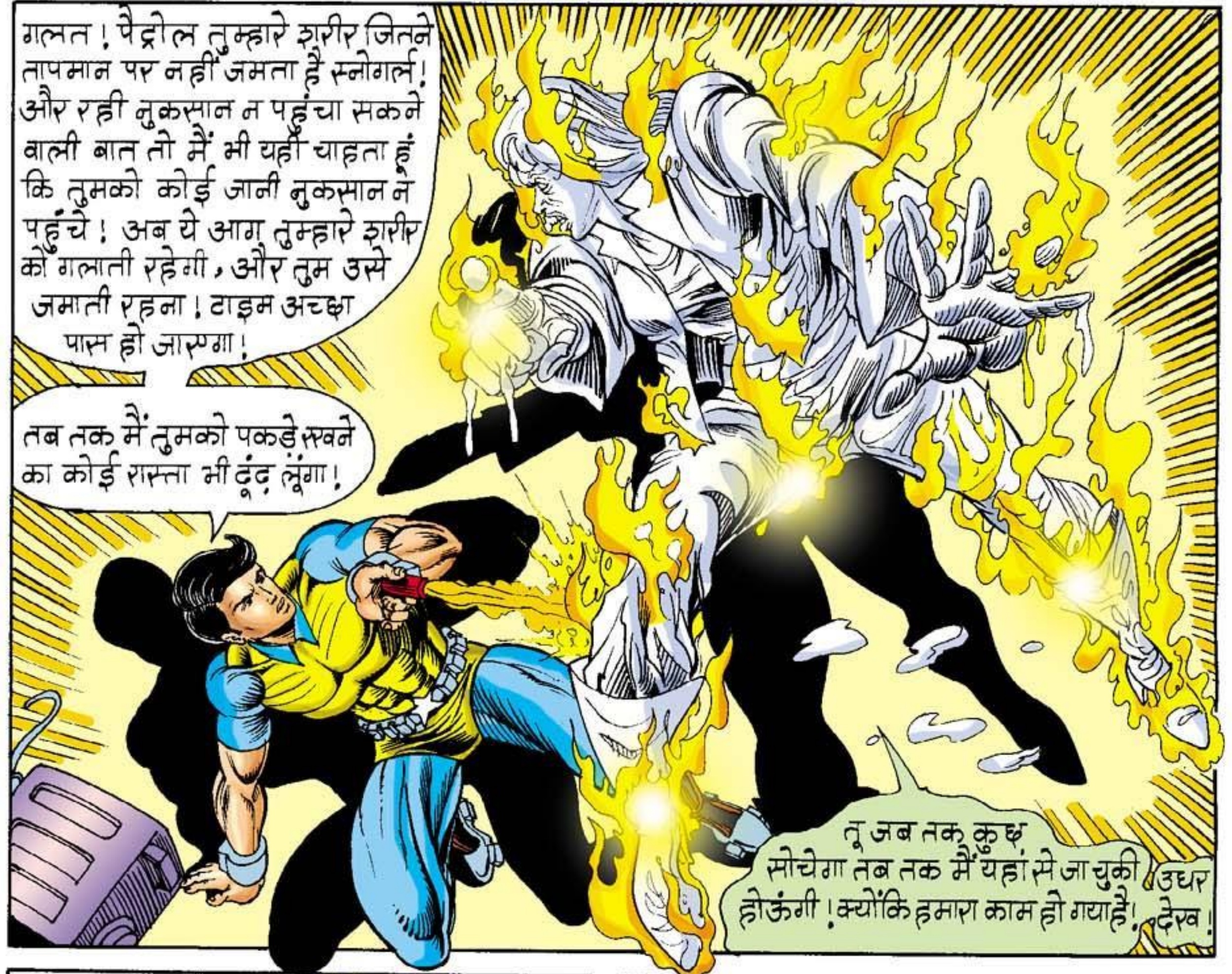
उस फैक्ट्री में फैले 'स्नोरोबो' की 'स्नो' की जांच करके! हर जगह की बर्फ का अपना एक खास गुण होता है! वह स्नोरोबो, अंटार्टिका यानी दक्षिणी ध्रुव की बर्फ से बना था!

तो फिर हमको दक्षिणी ध्रुव जाना होगा!

मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा ध्रुव! यह सब मुझसे शुरू हुआ है! अब इसको खत्म भी मैं ही करूंगा!

मैं भी अंटार्टिका स्थित एक लैब में काम कर चुका हूं, ध्रुव! मैं वहां के चप्पे-चप्पे से वाकिफ हूं। मैं भी तुम्हारी मदद कर सकता हूं!

ठीक है! हम तीनों जाएंगे! शीतान हैं कौन, और उनका मकसद क्या है, यह हमको पता करना ही होगा!

तो फिर चलो दक्षिणी ध्रुव!

✪ यह घटना कब घटी थी? यदि याद नहीं तो याद ताजा कीजिए और पढ़िए **महामानव**

तुमको पक्का पता है न बर्फ मानव कि हम सही रास्ते पर जा रहे हैं? अगर इतनी दूर आना था तो हैलीकॉप्टर वहीं पर क्यों छोड़ दिया?
क्योंकि आगे हैलीकॉप्टर उतारने लायक जगह नहीं है, वनपुत्र!
रास्ता सही लगता है वनपुत्र! क्योंकि आगे बर्फ उड़ती नजर आ रही है!
लेकिन इतनी बर्फ तो एक सेना के चलने पर उड़ती है! तो क्या...?
सेना नहीं; एक आदमी आ रहा है, ध्रुव!
सिर्फ एक आदमी!
आदमी नहीं... शैतान है!
एक अकेला शैतान!
वज्रकाया
धड़ाक

कड़ाक

इसके पास मत जाना, ध्रुव! वर्ना इसका एक ही घूंसा तुम्हारे शरीर में कई छेद कर देगा! बर्फ को बर्फ ही तोड़ेगी...

...आऽऽऽह! मेरा हाथ!

जरूर तोड़ेगी! लेकिन मेरे नाम के अनुरूप ही मेरी काया वज्र जैसी कठोर बर्फ की बनी है! इसलिए तेरी बर्फीली मुट्ठी तो मेरे शरीर को नहीं तोड़ पाएगी...

लेकिन मेरा घूंसा तेरे शरीर को जरूर तोड़ डालेगा!

आऽऽऽह!

तड़ाक

मैं इसको 'स्टारलाइन' से बांधता हूं! फिर ये वार नहीं कर पाएगा! और तुम इसको मार सकोगे बर्फ मानव!

ठम

चोट की आवाजें बता रही हैं कि ये अन्दर से खोखला है! इसको तोड़ना ज्यादा मुश्किल काम नहीं होना चाहिए!

एक वार से काम नहीं चलेगा! एक के बाद एक कई वार ताबड़तोड़ करने पड़ेंगे!

लेकिन जब तक इसके हाथ-पैर चलते रहेंगे, एक तो क्या, आधा वार करना भी मुश्किल है!

ये काम मुश्किल नहीं है...

असंभव है! क्योंकि वज्रकाया को सिर्फ हीरा काट सकता है! और वह यहां पर दूर-दूर तक मिलेगा नहीं!
सटाक
आऽऽऽह!
कड़ाक
ओह! मेरी 'स्टार लाइन' इसके बर्फीले शरीर में अंदर धंस गई है! यह आजाद हो गया है!
इसके वज्र जैसे शरीर को मेरे शीशम के पंजे तोड़ेंगे ध्रुव!
लेकिन कैसे वनपुत्र? यहां पर तो पौधों के उगने के लिए मिट्टी तक नहीं है!
आज मैं वह करूंगा जो मैंने सिर्फ एक बार परीक्षण के तौर पर किया था! वनपुत्र आज वृक्षों के साथ एकाकार होगा! खुद बनेगा वृक्ष! और उसके लिए न मिट्टी की जरूरत है, और न ही पानी की!
ये तो असंभव है वनपुत्र! भला ऐसा तुम कैसे कर सकते हो?
प्राणी और पौधे जीवन के ही दो अलग-अलग रूप हैं। एक ही सिक्के के दो पहलू! इसके लिए अपने शरीर की कोशिकाओं में जरा से बदलाव की जरूरत है! और वह शक्ति वनपुत्र के पास है!
तभी तो मैं वनपुत्र हूं!
जंगल का बेटा!

वज्रकाया को बराबर की टक्कर देने वाला शख्स मिल गया था-
वनपुत्र तेरे वज्र जैसे शरीर को भी तोड़ डालेगा!
हफ्फा-
आऽऽऽह! ठंड से लकड़ी का शरीर, पत्थर से भी ज्यादा सख्त हो गया है!
और लकड़ी की छाल बन चुकी इसकी खाल में दर्द का अहसास भी बाकी नहीं बचा है!
पर फिर भी तू बचेगा नहीं! मैं तुझे चीर डालूंगा!
दो पहाड़ आपस में टकरा रहे थे-
इसलिए ध्रुव और बर्फमानव वनपुत्र का हौसला बढ़ाने के अलावा और कुछ कर भी नहीं सकते थे-
शाबाश वनपुत्र! तोड़ डालो इसका शरीर!
क्या वज्रकाया का शरीर टूट सकता है?
इन वारों से वज्रकाया का बर्फीला नाखून तक नहीं टूटेगा!

धड़ाम्म्म
तू मुझे क्या तोड़ेगा? मैं ही तुझे चीरकर रख दूंगा!
तू टूटेगा, वज्रकाया!

अगर बाहर से नहीं, तो अन्दर से टूटेगा खोखले!
कड़ंक
कमाल की शक्ति है वनपुत्र में! उसने हीरे जैसी कड़ी बर्फ को भी नुकीली जड़ों से बर्मे की तरह छेद डाला है!
कोई फायदा नहीं होगा! मैं जड़ को निकालकर छेद को फिर से बंद कर लूंगा!

वनपुत्र के वार भी इसको तोड़ नहीं पा रहे हैं! हीरा यहां पर कहीं मिलेगा नहीं! फिर कैसे नष्ट होगा वज्रकाया? क्या चीज तोड़ सकती है इसको?
अरे हां! एक चीज तोड़ सकती है इसको! बड़े आराम से!
वनपुत्र इसके शरीर में एक और बड़ा सा छेद करो!
बर्फमानव तुम एक ऐसी मोटी बर्फ की सीरिंज बनाओ, जिसमें इतना समुद्री पानी भर जाए जो इसकी खोखली छाती और पेट को लबालब भर दे! लेकिन जल्दी, पानी हमको इसके शरीर में जमने से पहले पहुंचाना है!
तुम्हारे बोलते-बोलते ही मैंने सीरिंज बना भी ली है, और उसमें पानी भी भर लिया है! अब क्या करूं?

गड़गड़ गड़
इस पानी को वनपुत्र द्वारा बनाए गए छेद के जरिए वज्रकाया के शरीर में पहुंचा कर इसके अंदर की खाली जगह को लबालब भर दो!
वनपुत्र! अपनी जड़ को खींच लो!
पर इससे होगा क्या?

वज्रकाया का खात्मा! बस पानी जमने का इंतजार करो! जो दो या तीन सेकंडों में जम जाएगा!
देखो, इसके शरीर पर दरारें पड़नी शुरू हो गई हैं! अब इस पर एक साथ वार करो!
वाह! यह तो सचमुच टुकड़े-टुकड़े हो गया! पर कैसे?
पानी जमने से वनपुत्र! दरअसल पानी एक ऐसा द्रव है, जिसका आयतन जमने पर घटने के बजाय बढ़ जाता है! एक गिलास बर्फ एक गिलास पानी से ज्यादा जगह घेरेगी! इसीलिए जब बंद जगह में पानी बर्फ बनता है तो प्रकृति की इस शक्ति के आगे वह बंद जगह टूट जाती है! जैसे ठंडे देशों में पानी के पाइपों का फटना आम बात है!
कमाल है ध्रुव! वैज्ञानिक मैं हूं! लेकिन विज्ञान का सही उपयोग तुमने किया है! तुमने दिखा दिया कि एक छोटी सी जानकारी भी एटम बम जितनी विनाशकारी हो सकती है!
जो शक्ति लोहे के पाइप को फाड़ सकती है, वह वज्रकाया के शरीर में दरारें तो डाल ही सकती थी!
कमाल के मानव हैं ये!
बहुत खेल हो गया! अब चाल बदलनी पड़ेगी!
इनको जितनी जल्दी काबू में करेंगे, उतनी ही जल्दी दुनिया हमारे कब्जे में आएगी!
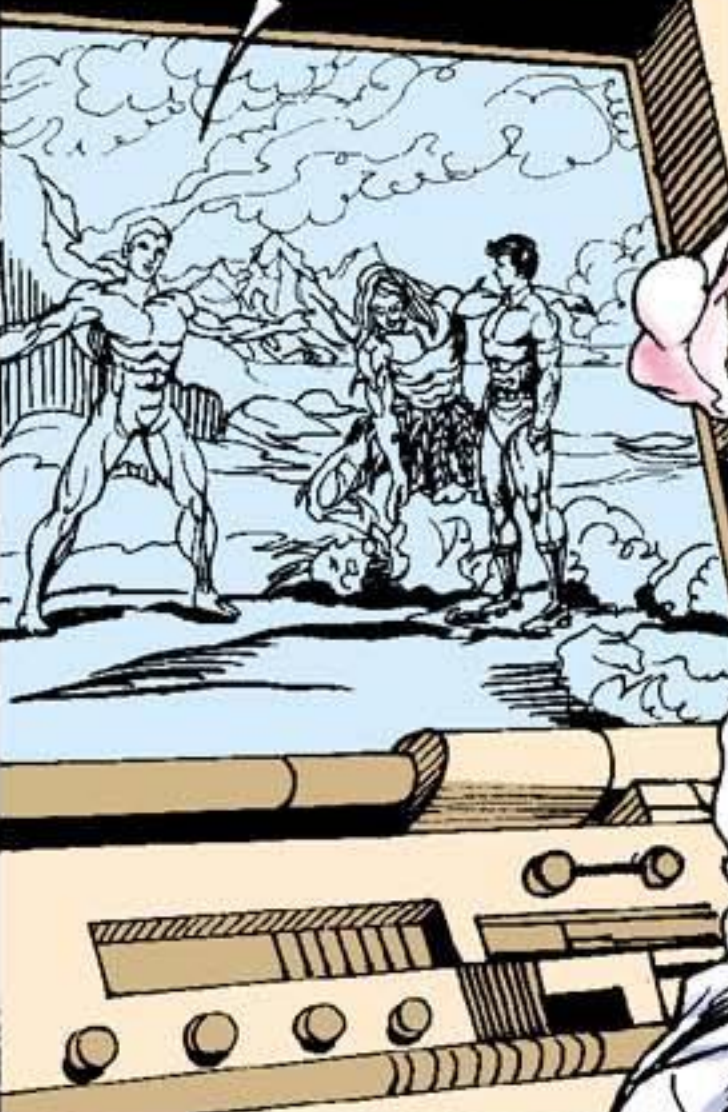
वज्रकाया के हमले से एक तो फायदा हुआ है ध्रुव! यह साबित हो गया है कि हम सही रास्ते पर जा रहे हैं! अब...

आऽऽऽह!
घप
य... यह क्या मुसीबत है?
आइस-स्नेक! जिसका जहर सिर्फ बर्फ के प्राणियों पर ही असर करता है!

इसकी काट सिर्फ हमारे पास है! अगर तुम अपने साथी को एड़ियां रगड़-रगड़कर मरता हुआ देखना नहीं चाहते हो तो आत्मसमर्पण कर दो!
ठीक है! हम तुमसे लड़ेंगे नहीं! अब इसको ठीक करो! पर तुम हो कौन?
एक मामूली शैतान! शीतराज का सेवक!

पकड़ लो इन दोनों को!
हमारी तुमसे कोई दुश्मनी नहीं है! हमको शीतराज के पास ले चलो! हम उनको समझाने की कोशिश करेंगे!

शीतराज के पास जाने की आवश्यकता नहीं है! शीतराज यहीं पर है!
मैं हूं शीतराज! वह सांप मेरा ही बनाया हुआ था! तुमसे आत्मसमर्पण कराने की चाल थी यह!
डॉक्टर वर्गीस! तुम... तुम ही शीतराज! शैतानों के राजा!
यह सब क्या चक्कर है?

यहीं पर संयोगवश मेरी मुलाकात शीतानों के बीमार राजा से हो गई ! अपने जैसा रूप देखकर इनको मुझ पर विश्वास हो गया ! शीतानों की प्रजाति पृथ्वी के बढ़ते तापमान के कारण धीरे- धीरे नष्ट हो रही थी ! इस बढ़ते तापमान का कारण थे मानव, और इस कारण वे भी शीतानों के दुश्मन थे ! मैंने लैब में शीतानों के राजा का चेकअप किया, और फिर एक ऐसा जीवाणु विकसित किया जो इनमें पैदा हो रहे बीमारी के जीवाणु को नष्ट कर सकता था !

इससे कई शीतान जी उठे ! लेकिन उनमें अभी शक्ति आनी बाकी थी ! शक्ति के लिए मैंने अपनी लैब में रखे खास प्रशीतक को इनके शरीर में पहुंचाया और इनकी शक्ति काफी हद तक वापस आ गई ! ये मुझको अपना नया राजा बना बैठे ! तब मैंने इनकी शक्ति को पूरी तरह से वापस लाने की ठानी, ताकि इनकी मदद से मैं मानवों को सबक सिखा सकूं !

उसके लिए प्रशीतकों की जरूरत थी और प्रशीतक महानगर या राजनगर में ही मिल सकते थे ! लेकिन उनको चुराने के लिए मानवों का ध्यान बंटाना आवश्यक था ! ध्यान बंटाने के लिए मुझे बर्फ में हजारों सालों से सुरक्षित दबे मैमोथ और सैबर टूथ जैसे विलुप्त पशु मिल गए ! मैंने जीव विज्ञान की मदद से उनको जूम्बी यानी चलते-फिरते मृत प्राणी बना लिया !

पर राजनगर में मैमोथ की पिटाई होते देखकर मैंने प्लान को बदल दिया ! और तुमको झांसा देकर अपने साथ अंटार्टिका ले आया !

बन्द कर दो इन तीनों को अतिशीत कक्ष में, जहां का तापमान कोई भी मानव ज्यादा देर तक नहीं सह सकता! और इन पर तब तक नजर रखना, जब तक ये मर नहीं जाएं! और इस दौरान हम सभी शैतानों को प्रशीतक देकर बलवान बना देंगे ताकि हम मानवों से घुटने टिकवा सकें!

और कुछ ही देर बाद-
अतिशीत कक्ष में-
मेरे दिमाग पर पड़ा पर्दा हट गया है, ध्रुव! मैं बहुत शर्मिन्दा हूं! मुझे तो मर जाना चाहिए! मेरी वजह से शीतानों को ताकत मिली है और दुनिया खतरे में पड़ गई है!
तुमको कानून तो सजा देगा ही डॉक्टर वर्गीस, और तुम्हारा पश्चाताप भी तुम्हारी सजा है! अब दिमाग यहां से बाहर निकलने में लगाओ! यहां पर तो मुझे गर्म रखने वाला यंत्र भी काम नहीं कर रहा है!
मेरे लकड़ी के शरीर पर चढ़ी मोटी छाल भी मेरी रक्षा नहीं कर पा रही है! तुम अंटार्टिका के विशेषज्ञ हो बर्फ मानव! तुम ही यहां से बाहर निकलने का रास्ता खोज सकते हो!
निकलना असंभव है वनपुत्र! हम पर नजर रखी जा रही है! अगर हम बाहर निकल भी गए तो हमारे भागने की खबर तुरन्त शीतानों तक पहुंच जाएगी!
और सवाल यह है कि बाहर निकलकर हम करेंगे क्या?
तुम्हारी लैब यहां से कितनी दूर है डॉक्टर वर्गीस?
ज्यादा नहीं! समझो पास में ही है!
और वहां पर तुम्हारे प्रयोग करने और जीवाणु बनाने लायक सामग्री मौजूद है या नहीं?
है! पर मैं बनाऊंगा कौन सा जीवाणु? और हम यहां से निकलकर वहां पहुंचेंगे कैसे?
ओफ्! अब तो खुद मुझे ठंडक महसूस हो रही है!
म... मेरे बदन पर तो बर्फ जमने लगी है!
लगातार झांकते शीतान पहरेदार ने इस बार जब अन्दर देखा तो तीनों के शरीर अकड़ चुके थे-
भयंकर शीत उनको मृत्यु के और करीब ले जा रही थी-

जल्दी ही शीतराज को भी इस खुशखबरी का पता चल गया-
तुमको पूरा भरोसा है न कि तीनों मर चुके हैं?
हां, शीतराज! उन तीनों में जीवन का कोई लक्षण नहीं है!
तब तो मानवों को न तो कोई बचाने वाला है और न ही सावधान करने वाला!
अब पहले हम वर्गीस की प्रयोगशाला में जाकर वहां मौजूद दूर संचार यंत्रों को चालू करेंगे। ताकि दुनिया के कोने-कोने में होने वाले शीतानों के हमलों को हम यहां से दिशा निर्देश दे सकें! चलो सभी शीतानों वर्गीस की लैब की तरफ!
वर्गीस की लैब का सन्नाटा जैसे टूटने की प्रतीक्षा कर रहा था-
लेकिन उस सन्नाटे को तोड़ने वाले-
शीतान नहीं, कोई और थे-
आऽऽऽ ह! तुमने समुद्री सिवारों को आदेश देकर 'अति शीत कक्ष' का फर्श तोड़कर बहुत बड़ा काम किया वनपुत्र! वर्ना हम शीतकक्ष के फर्श के नीचे मौजूद समुद्री पानी के रास्ते यहां तक कभी न पहुंच पाते!
दिमाग तो ध्रुव का था! वैसे पानी में डुबकी लगाने से मेरी ठंड दूर हो गई है!
ककड़ड़.ड़.ड़.ड़.ड़.ड़.ड़.ड़ा!!!!!क

अंटार्टिका या उत्तरी ध्रुव पर रहने वाले, ठंड भगाने के लिए अक्सर पानी में डुबकी लगा लेते हैं! क्योंकि पानी बाहर के वातावरण की तुलना में ज्यादा गर्म होता है! वैसे तुमको काम तुरन्त शुरू कर देना चाहिए डॉक्टर वर्गीस! हमारे पास ज्यादा समय नहीं है!

चिन्ता मत करो, तुमने जो मुझसे मेरे अपने और वनपुत्र के बर्फ के पुतले बनवाए हैं, वे शीतानों को काफी देर तक मूर्ख बनाए रखेंगे! वैसे वनपुत्र के पुतले के ऊपर तो मैंने इसके थोड़े से जड़ रूपी बाल चिपका दिए थे। पर तुम एक अतिरिक्त पोशाक क्यों पहने हुए थे?

श्वेता की जिद के कारण! जब भी मैं राजनगर से बाहर जाता हूं, वह मुझको दो पोशाकें पहनाकर भेजती है! ताकि लड़ने में अगर एक ड्रेस फट भी जाए तो मैं दूसरी पोशाक से काम चला सकूं!

आज इसी जिद के कारण शीतान मूर्ख बन रहे हैं! अब बताओ कि मुझको क्या करना है?

तुमने शीतराज का इलाज करके उसको एक जीवाणु से मुक्ति दिलाई थी! बस तुमको वही जीवाणु बड़ी संख्या में बनाने हैं! ताकि शीतान उस खास जीवाणु के कारण बीमार पड़ जाएं और दुनिया में तबाही न फैला सकें!

ये काम तो आसान है! क्योंकि मैंने उस जीवाणु का अध्ययन करने के लिए उसे संभालकर रखा हुआ है! अब मुझे सिर्फ उसको द्विगुणित करना है!
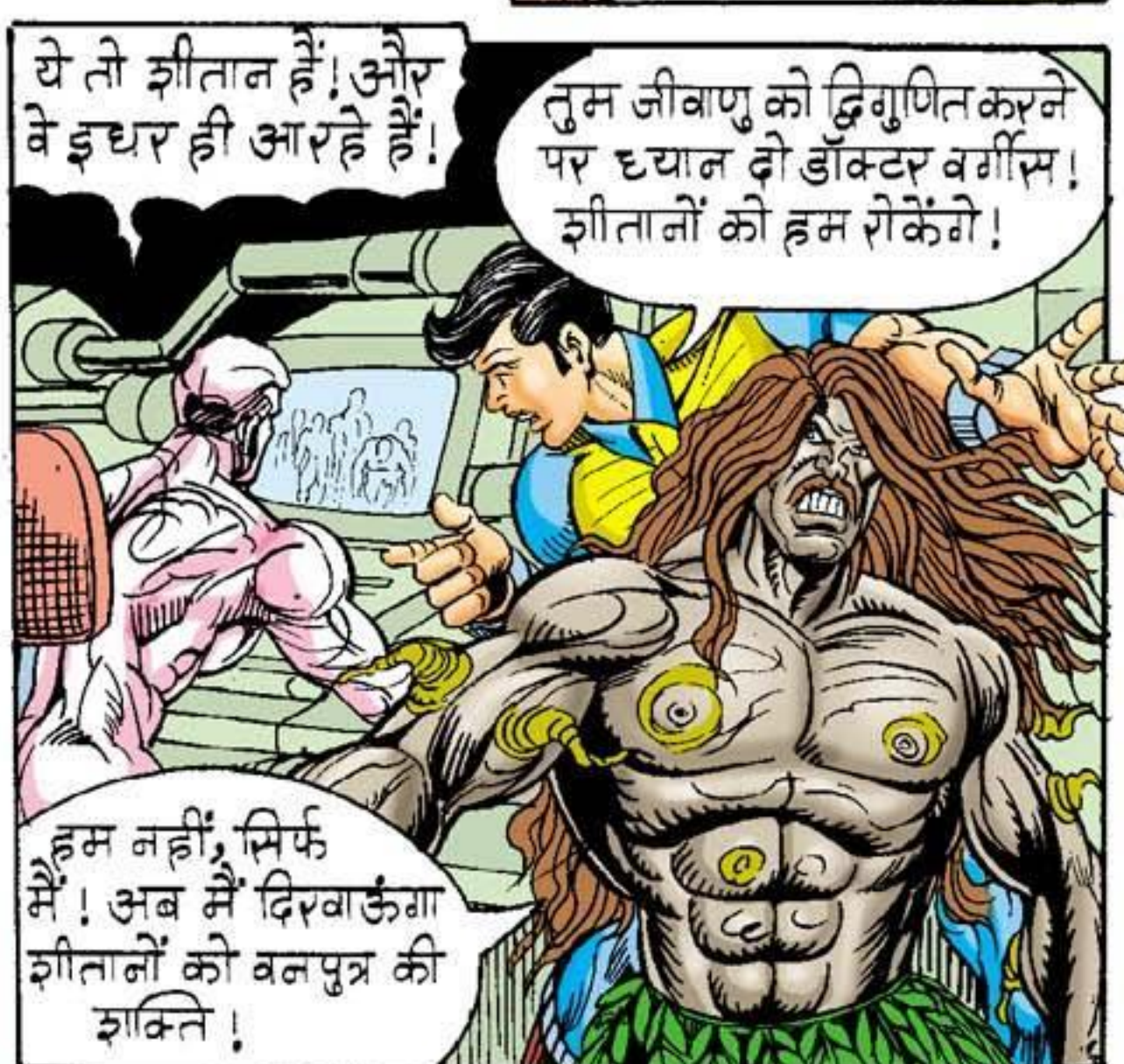
शीतानों के लैब की तरफ बढ़ते कदम यकायक थम गए-
वनपुत्र!
तू... तू जिन्दा कैसे है? और यहां कैसे आ गया?
मौत कहीं भी, किसी भी रूप में आ सकती है!
और मैं तुम्हारी मौत हूं!... आज बर्फ की गर्द में मिल जाओगे तुम सब शीतानो!
वनपुत्र ने काफी शीतानों का रास्ता रोक लिया था-
लेकिन सबका नहीं-
ये तादाद में बहुत ज्यादा हैं ध्रुव! अन्दर भी घुसते आ रहे हैं!
तुम्हारा काम हो गया है या नहीं?
हो गया है! लेकिन कोई फायदा नहीं होगा!
क्योंकि इस जीवाणु को इनके शरीर में इंजेक्शन द्वारा पहुंचाना होगा!...

और हर शीतान को इस जीवाणु का इंजेक्शन लगा पाना असंभव है! ये जीवाणु संक्रामक भी तो नहीं हैं कि एक शीतान के शरीर में पहुंचकर वहां से दूसरे शीतानों के शरीरों में फैल सकें!

फिर भी हमें इसको बचाना होगा, डॉक्टर वर्गीस!...

...क्योंकि ये हमारी एकमात्र उम्मीद हैsss

ध्रुव भी शीतानों से बच नहीं पाया-

अगर ये जीवाणु हमारे पास नहीं रहे तो इनके हाथ में भी नहीं रहने चाहिए!

पहले कांच टूटा, और फिर 'जीवाणु-मिश्रण' से भरा बीकर-

कड़ाक

नर्म बर्फ की सतह के नीचे न जाने कहां पर गुम हो गया-

अब दुनिया को बचाने का तरीका भी खो चुका था और मानवों के आजाद रह सकने की आस भी-

तीनों शीतानों के चंगुल में आ चुके थे-

अब हम अपनी गलती को नहीं दोहराएंगे! अपनी आंखों के सामने मारकर जाएंगे तुम तीनों को!

तुम तीनों शीतानों के हाथों मरने वाले पहले मानव होगे!

हा हा हा ! क्वैं-क्वैं!
हा हा हा हा ! क्वौं-क्वौंक !
क्वौं !
ध्रुव की हंसी के पीछे एक गुप्त सिग्नल छिपा हुआ था ! और इस गुप्त सिग्नल द्वारा सहायता की पुकार करते ही-
ये... ये हंस क्यों रहा है ? मुझे तो लग रहा है कि ये ठंड और डर से पागल हो गया है !
सैकड़ों पेंगुइन, शैतानों पर टूट पड़ीं-
कांटे जैसी तेज चोंचें हर शैतान के शरीर में छेद करने लगीं-

तू... तू पेंगुइनों से बात कर लेता है! लेकिन इनकी मदद से कुछ नहीं होगा! ये तीन फुटी चिड़िया तो हमारा भोजन है! ये भला हमारा क्या... बिगाड़... आऽऽऽ ह! आऽऽऽ ह!
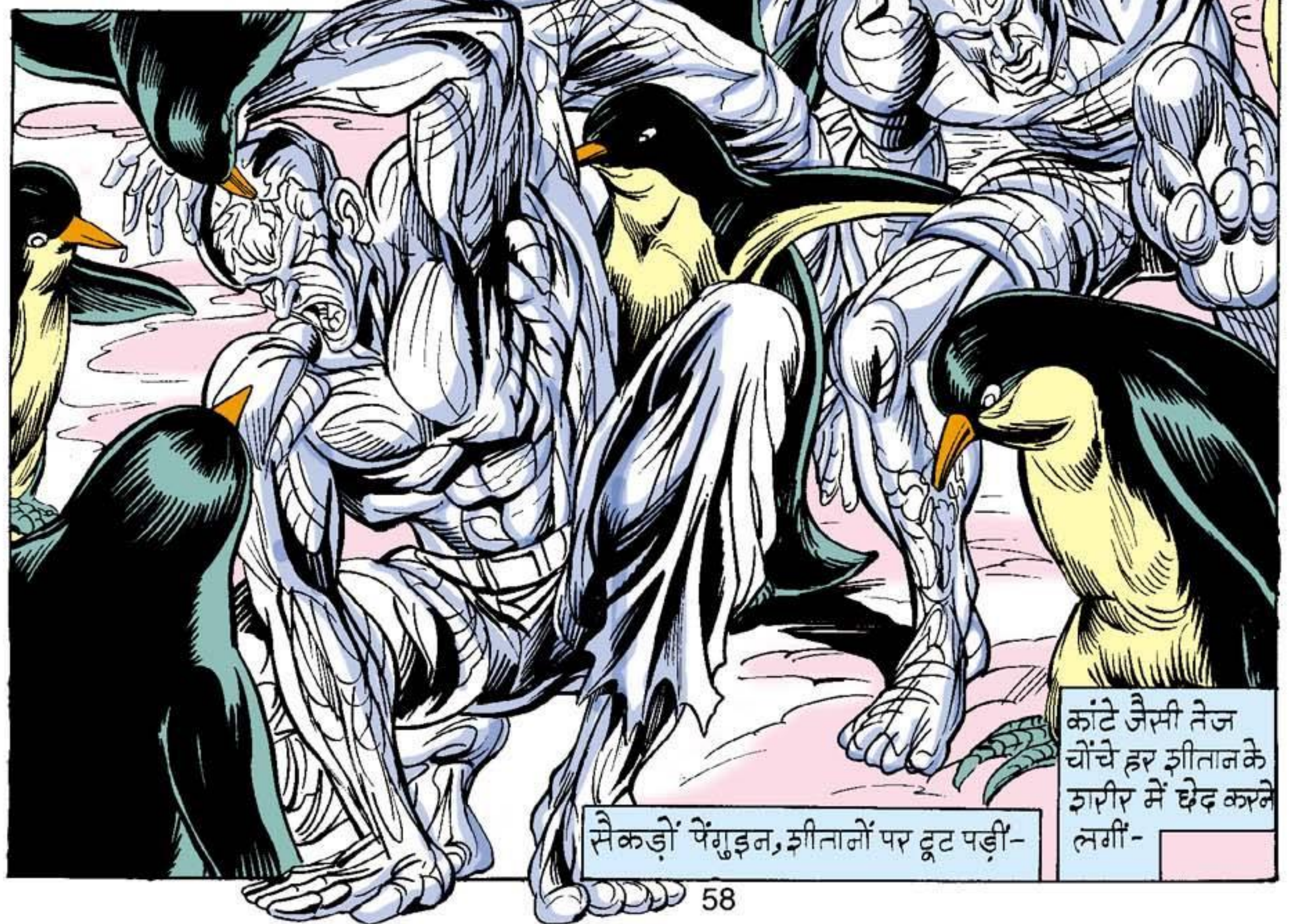
वह इसलिए क्योंकि तुम बीमार हो रहे हो, शीतानों के राजा शीतराज!

मुझे... मुझे क्या हो रहा है? आंखों के आगे... अंधेरा क्यों छा रहा है?

और तुम्हारे साथ-साथ सभी शीतान बीमार हो रहे हैं! क्योंकि इन सबके शरीरों में चोंच धंसाने वाली पेंगुइनों की चोंचे, 'जीवाणु मिश्रण' में भीगी हुई हैं!

मेरा संदेश पाकर पेंगुइनों ने पहले उस बीकर को ढूंढ़ निकाला और फिर उसमें चोंचे डुबोकर यहां पर आ गईं!

बर्फ मानव के अनुसार ये 'मिश्रण' इंजेक्शनों द्वारा तुम सबके शरीरों में पहुंचना चाहिए था! और पेंगुइनों ने चोंच से इंजेक्शन का काम ले लिया!

और थोड़ी देर बाद-

शीतानों का आतंक समाप्त हो चुका है ध्रुव! सारे शीतान बर्फ में मिलकर गायब हो चुके हैं! धरती वाले कभी जान नहीं पाएंगे कि उन पर कितना बड़ा खतरा मंडरा रहा था! अब मैं भी अपने सामान्य रूप में आ जाता हूं!

मुझे भी पुलिस के सामने अपने गुनाहों का इकरार करना है, ध्रुव! पर पता नहीं कि वे शीतानों की कहानी पर यकीन करेंगे या नहीं!

करें या न करें, पर तुम उन प्रशीतकों के सिलेंडरों को साथ ले चलना मत भूलना!

और न मैं अपनी ड्रेस को ले जाना भूलूंगा!

समाप्त